डेविड कॉपरफील्ड



चार्ल्स डिकेन्स के प्रसिद्ध उपन्यास
'डेविड कॉपरफील्ड' का सरल हिन्दी रूपान्तर

चार्ल्स डिकेन्स का प्रसिद्ध उपन्यास
DAVID COPPERFIELD का सरल हिन्दी रूपान्तर

मूल्य : पांच रुपये (5.00)

संस्करण : 1982 © शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली
DAVID COPPERFIELD (Novel), by Charles Dickens

डेविड कापरफील्ड

रूपान्तरकार : श्रीकान्त व्यास



शिक्षा भारती, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली

डेविड कापरफील्ड



शुक्रवार का दिन था। रात में जैसे ही घड़ी ने बारह का घंटा बजाया, इस पृथ्वी पर एक बालक का जन्म हुआ। बारह के घंटे एक के बाद एक बजने लगे और उस नवजात शिशु ने रो-रोकर मुहल्ले को जगाना शुरू किया। इस बच्चे का नाम डेविड कापर-फील्ड रखा गया।

जिस गांव में डेविड का जन्म हुआ था, उसका नाम था ब्लंडरस्टोन। डेविड के जन्म के छह महीने पहले ही उसके पिता स्वर्ग सिधार गए। डेविड का कुटुम्ब बहुत ही छोटा था। कोई खास नाते-रिश्तेदार नहीं थे। सिर्फ उसकी एक दादी मां थीं, जिनका नाम था मिस बेट्सी। डेविड के जीवन में इस दादी मां का, जो असल में उसके पिता की चाची थीं, बहुत बड़ा महत्त्व था। इसलिए पहले इन्हींका परिचय पा लिया जाए।

डेविड की दादी मिस बेट्सी का विवाह बहुत दिन पहले हुआ था। वैसे तो उनके पति अच्छी तरह ही रहते थे और ढंग से काम करते थे, लेकिन उनका दिमाग बहुत बढ़ा-चढ़ा था। वे अक्सर अपनी पत्नी से झगड़ा किया करते थे। रोज़-रोज़ के इस झगड़े से बेट्सी ऊब गई और एक दिन अपने पति को छोड़कर दूसरा घर लेकर रहने लगीं।

इसके बाद बेट्सी के पति हिन्दुस्तान की यात्रा पर चले गए। हिन्दुस्तान में वे क्या करते थे, इसका किसीको पता नहीं था।

वहां से उनकी कोई खबर भी नहीं मिली। एक के बाद एक कई साल बीत गए। अन्त में दस साल बाद डेविड की दादी को खबर मिली कि उसके पति इस संसार में नहीं रहे।

अपने पति की मृत्यु की खबर सुनकर बेट्सी के मन पर क्या गुज़री यह नहीं मालूम, लेकिन उसके बाद से उन्होंने शहर में रहना छोड़ दिया। वे समुद्र के किनारे एक गांव में घर लेकर रहने लगीं। एक तरह से उन्हें सारी दुनिया के लोगों से चिढ़ हो गई थी। इस संसार में वे सिर्फ डेविड के पिता को ही चाहती थीं, लेकिन डेविड के पिता ने जब उनकी मर्ज़ी के खिलाफ शादी कर ली तो वे उससे भी नाराज़ रहने लगीं।

डेविड की दादी ऊपर से नाराज़ तो डेविड के पिता पर रहती थीं, लेकिन असल में उनका गुस्सा डेविड की मां पर था, क्योंकि डेविड की मां की उम्र बहुत कम थी और वह देखने में बहुत सुन्दर थी। वह बिलकुल लड़की जैसी लगती थी। उससे कोई बड़ा काम नहीं होता था। इसलिए उन्होंने डेविड के घर जाना छोड़ दिया था। लेकिन डेविड के जन्म के छह महीने पहले ही उसका पिता चल बसा। डेविड के पिता के मरने पर मिस बेट्सी उसके घर गईं। बरसों बाद पहली बार वे उस घर में आई थीं। भाग्य की बात कि उसी दिन उस घर में एक विशेष घटना घटी—उसी दिन डेविड का जन्म हुआ।

शाम हो गई थी। डेविड की मां उदास मन से अंगीठी के पास बैठी थी। उसकी तबियत ठीक नहीं थी। उसे बार-बार रोना आ रहा था, क्योंकि हाल में ही उसके पति की मृत्यु हुई थी और उसके पेट में बच्चा था। इसी बच्चे के भविष्य के बारे में सोचकर बार-बार उसकी आंखें गीली हो जाती थीं। आंसू पोंछते-पोंछते अचानक उसकी नज़र बाहर की तरफ गई। उसने देखा कि बड़े ठाठ-बाट के साथ कोई महिला उसके घर के बगीचे में से होकर आ रही है।

डेविड की मां का नाम क्लारा था। उसने कभी भी डेविड की

दादी को नहीं देखा था। वह शक्ल से उसे नहीं पहचानती थी, लेकिन डेविड के पिता से उसने कई बार उसके बारे में सुना था। उसे लगा यही मिस बेट्सी हैं। क्योंकि बिना कुछ पूछे-ताछे वे फाटक ठेलकर अन्दर घुस आईं और सीधे उसके पास आ पहुंचीं। पहले तो वे खिड़की से उसको घूरकर देखती रहीं। क्लारा भी पहले जहां बैठी थी, वहीं बैठी रही। अन्त में उठकर उसने दरवाज़ा खोल दिया।

मिस बेट्सी दरवाज़े में ही खड़ी रहीं और अपनी भौंहें सिकोड़कर बोलीं, "क्यों, तुम्हीं कापरफील्फ की बीवी हो न ?"

डेविड की मां ने धीरे से 'हां' कहा। इसपर मिस बेट्सी बोलीं, "मेरा खयाल है, तुमने शायद अभी तक मिस बेट्सी का नाम ही सुना होगा ?"

क्लारा ने सिर हिलाकर इसकी भी स्वीकृति दी। मिस बेट्सी ने कहा, "तो ठीक है, अब अच्छी तरह देख लो, मैं तुम्हारे सामने खड़ी हूं !" क्लारा ने सिर झुकाकर मिस बेट्सी को नमस्कार किया और उन्हें अन्दर आने को कहा।

मिस बेट्सी अन्दर आकर एक जगह बैठ गईं। कुछ देर दोनों चुपचाप बैठी रहीं, लेकिन डेविड की मां की आंखों में आंसू उमड़ रहे थे। वह चुप नहीं रह सकी और एकाएक रो पड़ी। इसपर मिस बेट्सी ने घबराकर कहा, "अरे, अरे, यह क्या करती हो ! रोओ मत, चुप हो जाओ।"

लेकिन क्लारा चुप न हो सकी। बहुत देर तक वह रोती रही। जब वह खूब रो चुकी तो अपने-आप चुप हो गई।

मिस बेट्सी ने कहा, "ज़रा इधर आओ, एक बार तुम्हारा मुंह तो देखूं !"

क्लारा को यह कुछ अच्छा नहीं लगा। लेकिन वह इन्कार भी नहीं कर सकती थी। उसने अपने सिर पर जो टोपी पहन रखी थी, उसे अलग कर दिया। टोपी के उतरते ही उसके सुन्दर रेशमी बाल उसके चेहरे पर फैल गए। इससे वह और भी ज़्यादा

सुन्दर दिखाई देने लगी। मिस बेट्सी ने आश्चर्य से कहा, "हे भगवान्, तुम तो बिलकुल बच्ची हो।"

और सचमुच डेविड की मां बच्ची जैसी ही थी। मिस बेट्सी की बात सुनकर उसकी घबराहट और बढ़ गई। उसे लगा जैसे उसने कोई अपराध किया है। वह बोली, "अब मेरा क्या होगा ?"

क्लारा ने सोचा कि मिस बेट्सी उसके सिर पर हाथ फेरकर उसे दिलासा देने की कोशिश करें तो कितना अच्छा हो। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। मिस बेट्सी तो अपनी कमर पर हाथ टेके चुपचाप बैठी रहीं। फिर वे उठकर खिड़की के पास जा खड़ी हुईं। क्लारा चुपचाप बैठी रही। अचानक मिस बेट्सी ने क्लारा की तरफ घूमकर कहा, "अच्छा, यह तो बताओ, बच्चा कब होने वाला है ?"

क्लारा बोली, "ईश्वर जाने। मैं तो इसके नाम से कांप उठती हूं। मैं ज़रूर मर जाऊंगी !"

"बेकार की बात मत करो। मरेगी तुम्हारी बला। तुम तो ज़रा गरम-गरम चाय पी लो। तुम कुछ डर गई हो। चाय पीने से तुम्हारी तबियत हल्की हो जाएगी। तुम्हारी नौकरानी का क्या नाम है ?"

"उसका नाम है पेगटी।"

मिस बेट्सी ने मुंह बिचकाकर कहा, "यह कैसा नाम है ? पेगटी ! बड़ा गन्दा नाम मालूम होता है।"

क्लारा बोली, "नहीं। यह उसका सही नाम नहीं है। उसका नाम और मेरा नाम मिलता-जुलता है, इसलिए हम लोग उसे इस नाम से बुलाते थे।"

मिस बेट्सी ने अन्दर जाकर नौकरानी को आवाज़ दी और उसे क्लारा के लिए एक प्याला चाय बना लाने को कहा। वह इस तरह हुक्म दे रही थीं जैसे इस घर की मालकिन हों। नौकरानी भी कुछ चौंकी।

फिर मिस बेट्सी अन्दर आकर बोलीं, "मुझे तो लगता है कि

तुम्हें लड़की ही होगी। और अगर ऐसा ही हुआ तो जैसे ही लड़की पैदा हो तुम···।"

लेकिन क्लारा बीच में ही बोली, "हो सकता है, लड़का हो !"

मिस बेट्सी ने उसे झिड़कते हुए कहा, "बेकार बहस न करो, मुझे पहले से ही मालूम हो गया है कि लड़की होगी। और मैं कह देती हूं कि अगर लड़की हुई तो उसे फौरन मेरे यहां रख दिया जाए। मैं उसे अपने यहां पाल लूंगी, और इस तरह पालूंगी कि लोग देखते रह जाएंगे !"

इसपर क्लारा ने कुछ नहीं कहा। थोड़ी देर बाद मिस बेट्सी ने अचानक पूछा, "क्यों, कापरफील्ड तुमको बहुत चाहता था न ?"

क्लारा ने सिर हिलाकर 'हां' कहा। मिस बेट्सी ने आगे कहा, "अब समझी, इसी तरह तुम्हें लाड़-दुलार से रखकर उसने तुम्हारी आदत खराब कर रखी है। तुम्हें अभी तक बिलकुल बच्ची बना रखा है !"

यह सुनकर क्लारा फिर से रो पड़ी। मिस बेट्सी ने उसे डांटते हुए कहा, "बस, बस, रोओ-धोओ मत ! अच्छा बताओ, तुम घर का काम-काज तो कर लेती हो न ?"

क्लारा की समझ में यह बात नहीं आई। उसने कांपती हुई आवाज़ में पूछा, "क्या कहा ?"

"यही पूछ रही हूं कि तुम घर का काम-काज कर लेती हो या नहीं ? क्या इतना भी तुम्हारी समझ में नहीं आता ! घर का काम, रुपये-पैसे का हिसाब रखना, नौकर-चाकर से काम लेना—बस, यही सब।"

क्लारा बोली, "मुझे यह सब ठीक से आता नहीं। मुझे कुछ डर भी लगता है। आप मुझे सिखा दीजिएगा।"

यह कहते-कहते क्लारा का चेहरा न जाने कैसा हो गया। उसकी तबियत ज़्यादा खराब हो गई। शायद उसे चक्कर आ

गया था। इतने में नौकरानी ने चाय का प्याला लेकर कमरे में प्रवेश किया। देखते ही उसने दौड़कर क्लारा को सम्भाल लिया और उसे एक कमरे में ले जाकर आराम से बिस्तर पर लिटा दिया। फिर उसने अपने भतीजे को बुलाकर उसे डाक्टर के पास भेज दिया।

नौकरानी ने अपने भतीजे को चुपके से बुला रखा था, क्योंकि वह जानती थी कि न जाने कब मौका पड़ जाए और डाक्टर वगैरह को बुलाने का काम पड़े, तो ऐसे समय में उसकी मदद कौन



करेगा। खुद क्लारा को भी यह नहीं मालूम था। थोड़ी ही देर में वह डाक्टर को बुला लाया। डाक्टर ने भी पहले कभी मिस बेट्सी को यहां नहीं देखा था, इसलिए वह उन्हें नमस्कार किए बिना सीधा अन्दर चला गया। फिर क्लारा को देखकर वह बाहर मिस बेट्सी के सामने ही एक कुर्सी पर आ बैठा। डाक्टर ने मिस बेट्सी से कुछ बातचीत शुरू करनी चाही। उसकी समझ में नहीं आया कि किस तरह से बातचीत शुरू करे। अचानक उसकी नज़र मिस बेट्सी के कान की ओर गई। अपने कान में उन्होंने रूई खोंस रखी थी। डाक्टर ने पूछा, "क्या कान में कुछ दर्द है ?"

पहले तो मिस बेट्सी ने उसकी बात पर कुछ ध्यान नहीं दिया। लेकिन जब उसने दूसरी बार पूछा तो मिस बेट्सी नाराज़ हो गईं। गुस्से में भरकर उन्होंने जवाब दिया, "कैसा दर्द ? तुम्हारे कान में दर्द होगा।"

डाक्टर हक्का-बक्का रह गया। उसने बातचीत करनी चाही थी लेकिन मिस बेट्सी तो बेकार ही नाराज़ हो गईं। अब डाक्टर को कोई विषय नहीं सूझा, वह चुप बैठा रहा। थोड़ी देर बाद नौकरानी डाक्टर को फिर बुलाने आई। डाक्टर दौड़ता हुआ क्लारा के कमरे में गया।

इधर मिस बेट्सी क्लारा का समाचार जानने के लिए बेचैन होकर कमरे में टहलने लगीं। एक के बाद एक घण्टा बीतने लगा। अन्त में रात के साढ़े बारह बजे डाक्टर बाहर आया। आते ही उसने मिस बेट्सी से कहा, "मेरी बधाई स्वीकार कीजिए।"

"बधाई ! किस बात की बधाई ?" मिस बेट्सी ने पूछा।

डाक्टर ने हंसकर कहा, "आधा घण्टा पहले ही श्रीमती कापरफील्ड ने एक बच्चे को जन्म दिया है।"

"और क्लारा की तबियत कैसी है ?"

"ठीक है। अब आप खुशी से उनके पास जा सकती हैं।"

मिस बेट्सी ने अधीर होकर पूछा, "और लड़की ? लड़की कैसी है ?"

"कैसी लड़की ? आपने सुना नहीं ? लड़का हुआ है, लड़का।"

यह सुनते ही बेट्सी का चेहरा उतरगया। वह जहां खड़ी थीं, वहीं खड़ी रह गईं। फिर अचानक उन्होंने अपनी टोपी पहनी और डाक्टर को थप्पड़ मारकर फौरन घर से बाहर निकल गईं।

2



धीरे-धीरे डेविड बड़ा होने लगा। घर का सारा काम-काज नौकरानी पेगटी ही चलाया करती। डेविड की मां और डेविड हर तरह से पेगटी पर निर्भर रहते थे और उसकी सलाह के बिना कोई काम नहीं करते थे। नौकरानी भी उनदोनों का बड़ा खयाल रखती थी और हमेशा इस कोशिश में रहती थी कि उन्हें किसी तरह की तकलीफ न होने पाए। इस तरह डेविड और उसकी माता के दिन सुख-चैन से कट रहे थे।

लेकिन कहावत है कि सब दिन एक समान नहीं जाते। अचानक एक दिन एक बड़ी विचित्र घटना घटी। उस दिन डेविड नौकरानी के साथ अपनी तुतली बोली में बातचीत कर रहा था कि अचानक बाहर की घंटी बज उठी।

दोनों दौड़ते हुए बाहरी दरवाज़े के पास पहुंचे। नौकरानी ने दरवाज़ा खोल दिया। डेविड यह देखकर चौंक पड़ा कि बाहर उसकी मां एक अजनबी आदमी के पास खड़ी थी और खूब हंस-हंसकर बातें कर रही थी। वह आदमी देखने में बड़ा अच्छा मालूम होता था। डेविड फौरन उसे पहचान गया। पिछले रविवार को जब वह प्रार्थना के लिए अपनी मां के साथ गिरजा-घर गया था, वहां उसने इस आदमी को देखा था—उस दिन भी क्लारा से वह आदमी घुल-मिलकर बातें कर रहा था।

डेविड को यह देखकर भी आश्चर्य हुआ कि आज उसकी मां बहुत प्रसन्न नज़र आ रही थी। उसका कई दिनों से मुरझाया हुआ चेहरा खिल उठा था। सुन्दर तो वह थी ही लेकिन इतनी

अच्छी वह कभी नहीं दिखाई दी थी। डेविड को देखते ही उसने उसे गोद में उठा लिया और सीने से लगा लिया। वह अजनबी आदमी भी प्यार से डेविड के सिर पर हाथ फेरने लगा। लेकिन न मालूम क्यों वह आदमी डेविड को पसन्द नहीं आया। उसे उसकी आवाज़ बहुत सख्त मालूम हुई। उसने फौरन उस आदमी का हाथ अपने सिर से झटक दिया। यह देखकर डेविड की मां बहुत नाराज़ होकर बोली, "यह क्या डेविड, भला ऐसा भी कहीं करते हैं!"

वह आदमी भी कुछ चौंक पड़ा था, लेकिन फिर हंसकर बोला, "कोई बात नहीं, इसे कुछ न कहो। यह बहुत अच्छा बच्चा मालूम होता है! यह अपनी मां को बहुत चाहता है। और यह एक अच्छी ही बात है। आज से हम दोनों दोस्त हुए!" यह कहकर उसने हाथ मिलाने के लिए अपना दाहिना हाथ आगे बढ़ा दिया।

लेकिन डेविड ने पहले तो अपना हाथ बढ़ाया ही नहीं, और फिर बहुत सकुचाते हुए बायां हाथ आगे कर दिया। उसकी मां बोली, "नहीं, नहीं, दाहिना हाथ आगे करो।"

यह कहकर उसने खुद ही डेविड का दाहिना हाथ आगे करने की कोशिश की। लेकिन डेविड इसके लिए तैयार नहीं हुआ। उसे वह आदमी कुछ पसन्द नहीं था, इसलिए वह उससे हाथ नहीं मिलाना चाहता था। उसकी मां ने बहुत कोशिश की लेकिन डेविड ने हाथ नहीं मिलाया। वह अजनबी यह देखकर कुछ नाराज़ हो गया, लेकिन हंसने की कोशिश करते हुए बोला, "कोई बात नहीं, बड़ा बहादुर लड़का मालूम होता है!" उसने डेविड का बायां हाथ ही अपने हाथ में लेकर प्यार से थपथपाया और फिर वहां से चलता बना।

धीरे-धीरे डेविड को नौकरानी से बातचीत करने के बाद मालूम हो गया कि वह अजनबी कोई बहुत बड़ा अमीर आदमी था। अब अक्सर वह डेविड के घर आने लगा। लेकिन न मालूम



क्यों डेविड को वह कभी पसन्द नहीं आया। उसे देखकर डेविड को बहुत बुरा लगता था। वह चाहता था कि वह आदमी उसके यहां कभी न आए। जब वह उसे अपनी मां के पास हंसते हुए और मज़ाक करते हुए देखता था, उसे और भी बुरा लगता था। न जाने कैसे डेविड के मन में यह बात पक्की तरह से बैठ गई थी कि यह आदमी उसकी मां को उससे दूर करना चाहता है, उससे छीनना चाहता है।

एक दिन की बात है, पेगटी ने डेविड से कहा, "डेविड, मैं कुछ दिनों के लिए घर जा रही हूं, अपने भाई के यहां।" यह सुनते ही डेविड का चेहरा उतर गया। वह अपनी नौकरानी को बहुत चाहता था और थोड़ी देर के लिए भी उससे अलग नहीं रह सकता था। उसका चेहरा देखकर नौकरानी ने हंसते हुए कहा, "तुम चलोगे मेरे साथ ? चलो, दस-पन्द्रह दिन बाद लौट आएंगे।" पेगटी के भाई का घर 'यारमाउथ' नामक एक गांव में था। वहां जाने के लिए घोड़ागाड़ी में सफर करना पड़ता था। यह सोचकर डेविड खुशी से नाच उठा। उसने पूछा, "तुम्हारा भाई अच्छा आदमी है न ? वह मुझसे नाराज़ तो नहीं होगा ?"

"नहीं, नहीं, नाराज़ क्यों होगा ! वह तो बहुत ही भला आदमी है। उसका घर समुद्र के किनारे है। वह तुम्हें रोज़ घुमाने ले जाएगा। वहां तरह-तरह के जहाज़ आते हैं। तुम खूब जहाज़ देखना और मेरे भाई के साथ खेलना।"

"लेकिन मां मुझे जाने देगी !"

नौकरानी बोली, "हां, हां, क्यों नहीं, लो तुम्हारी मां आ रही हैं, उनसे पूछ लो।"

इतने में डेविड की मां आ पहुंची। नौकरानी ने उसे सारी बात बताई और डेविड को अपने घर ले जाने की इजाज़त मांगी। डेविड की मां फौरन राज़ी हो गई। उसी दिन यारमाउथ की यात्रा की बात पक्की हो गई।

3



अभी जाने में एक-दो दिन की देरी थी, लेकिन डेविड तो रात-दिन यात्रा के सपने देखता था। कभी-कभी उसे डर लगता था कि कहीं मां इन्कार न कर दे। वह रोज़ नौकरानी से पूछता था, "हम लोग कब चलेंगे ? तुम तो कहती थीं कि जल्दी ही चलेंगे, लेकिन आज दो दिन हो गए। कहीं ऐसा न हो कि मां मुझे जाने से रोक दे।" लेकिन ऐसा नहीं हुआ। जाने की तैयारी होने लगी और एक दिन डेविड अपनी नौकरानी के साथ घोड़ागाड़ी में बैठकर चल पड़ा।

डेविड की खुशी की सीमा नहीं थी। लेकिन जैसे ही गाड़ी चलने लगी, अचानक उसकी मां दौड़ती हुई आई और गाड़ी वाले को गाड़ी रोकने के लिए पुकारने लगी। गाड़ी रुक गई। उसने दौड़कर डेविड को गले से लगा लिया और बार-बार उसे चूमना शुरू किया। प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते उसकी आंखों से आंसू बहने लगे। डेविड यह सब कुछ समझ नहीं सका। लेकिन फिर भी मां को रोते देखकर बहुत उदास हो गया।

थोड़ी देर बाद गाड़ी चल पड़ी। डेविड की मां आंसू बहाती ही रही। इतने में वह अजनबी, जिसका नाम अब डेविड को मालूम हो गया था—मिस्टर मर्डस्टन न जाने कहां से वहां आ पहुंचा और डेविड की मां को समझाते हुए बोला, "बस करो, इस तरह रोने की क्या ज़रूरत है ?"

डेविड गाड़ी की खिड़की में से यह सब देखता रहा। मि० मर्डस्टन को देखकर उसे गुस्सा आ गया। पेगटी भी खिड़की में

से देख रही थी, लेकिन उसने फौरन उधर से मुंह फेर लिया। डेविड को लगा कि पेगटी को भी मि० मर्डस्टन का वहां इस तरह आ जाना अच्छा नहीं लगा। लेकिन वह कुछ बोली नहीं। अब गाड़ी तेज़ी से चलने लगी थी।

सवेरे का समय था। गाड़ी तेज़ी से चली जा रही थी। डेविड को यह सब अच्छा लग रहा था। कुछ ही देर में उसका चेहरा खुशी से खिल उठा। काफी देर बाद उन्होंने गाड़ी में ही खाना खाया। गाड़ी अपने-आप चलती रही और गाड़ीवान ऊंघता रहा। दोपहर होते-होते वे लोग यारमाउथ पहुंच गए।

पेगटी बोली, "डेविड, लो हम लोग आ पहुंचे। वह देखो, वह अपना घर दिखाई दे रहा है, वह सफेद-सफेद-सा उस पेड़ के पास।"

कुछ ही देर में गाड़ी घर के सामने जा खड़ी हुई। पेगटी का भतीजा हेम दरवाज़े पर खड़ा उन लोगों की राह देख रहा था। डेविड हेम को पहले से ही जानता था। वह कभी-कभी पेगटी से मिलने के लिए उसके घर आया करता था और उससे खूब खेलता था। हेम ने आगे बढ़कर डेविड के गाल थपथपाए और उसे गाड़ी से नीचे उतार लिया। फिर सारा सामान उतारा गया। लेकिन डेविड को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हो रहा था क्योंकि वह घर कुछ विचित्र-सा लग रहा था। वह एक छोटे-से जहाज़-सा दिखाई देता था। पास जाने पर उसने देखा कि वह सचमुच एक बड़ी भारी नाव थी, जिसमें एक मोटी-सी चिमनी लगी थी। चिमनी में से धुआं निकल रहा था। डेविड ने आश्चर्य से कहा, "क्या यही तुम्हारा घर है ? यह तो घर जैसा नहीं मालूम पड़ता, यह तो जैसे नाव की तरह लगता है।"

हेम हंसकर बोला, "हां, हां, यही हमारा घर है।"

डेविड को बड़ा आश्चर्य हो रहा था। वह सचमुच एक पुरानी नाव थी, जो किनारे पड़ी हुई थी। उसीको लीप-पोतकर घर की शक्ल दे दी गई थी। जगह-जगह उसमें खिड़कियां बनी हुई थीं।

ऊपर छत भी थी। एक ज़माने में यह नाव समुद्र में चलती थी और देश-देशान्तर घूमती थी। लेकिन अब वह पानी में चलने लायक नहीं थी। उसे किनारे पर एक जगह ज़मीन पर खड़ा कर दिया गया था। हेम इसीमें रहता था। यह सब देखकर डेविड को बड़ा अच्छा लगा।

अन्दर पहुंचने पर एक स्त्री ने उन लोगों का स्वागत किया। डेविड ने देखा कि उसके पास ही एक छोटी बच्ची भी खड़ी थी। वह लगभग डेविड की उम्र की थी। उसका नाम एमली था। उसे देखकर डेविड बड़ा खुश हुआ। डेविड ने उसकी ओर अपना हाथ बढ़ा दिया, लेकिन हाथ मिलाने के बजाय वह हंसती हुई वहां से भाग गई।

फिर सब लोग एक टूटी-सी मेज़ पर भोजन के लिए इकट्ठे हुए। इस समय एक आदमी और वहां आ पहुंचा। वह पेगटी को बहन कहकर बुलाता था। डेविड ने समझ लिया कि यही पेगटी का भाई है। पेगटी ने भी बताया, "ये मेरे भाई हैं, इनका नाम मिस्टर पेगटी है।"

खाना खाने के बाद सब बैठकर बातें करने लगे। मि० पेगटी ने अभी तक शादी नहीं की थी। हेम उनके भाई का लड़का था, हेम के पिता समुद्र में डूबकर मर चुके थे। एमली भी, जिसे डेविड ने पेगटी की लड़की समझा था, एक विधवा की बेटी थी, जो मि० पेगटी के यहां रहती थी। इस स्त्री का नाम श्रीमती गेमिज़ था। ये सब लोग मि० पेगटी के आश्रित थे। और उनका कोई परिवार नहीं था। इसलिए सब उनके यहां आराम से रहते थे।

सबसे डेविड की अच्छी जान-पहचान हो गई। दूसरे दिन सवेरे डेविड उठकर एमली के साथ समुद्र के किनारे घूमने गया। समुद्र में बड़ी ऊंची-ऊंची लहरें उठ रही थीं। यह देखकर डेविड खुशी से नाच उठा। वह एमली के साथ खेलने लगा। एमली से उसकी अच्छी दोस्ती हो गई थी। वह देखने में जितनी सुन्दर थी, स्वभाव की भी वैसी ही अच्छी थी। वह कभी डेविड के साथ

झगड़ा नहीं करती थी। दोनों साथ-साथ दिन-भर इधर-उधर घूमते रहते थे। एमली उसे जगह-जगह ले जाती थी और नये से नये खेल सिखाती थी।

इसी तरह खेल-कूद में पन्द्रह दिन बीत गए। अब घर लौटने का समय आ गया। लेकिन डेविड का मन यहां इतना लग गया था कि यहां से जाते समय उसे बड़ा दुःख हो रहा था। उसने एमली से कहा, "एमली, तुम मुझे भूल तो नहीं जाओगी ?"

एमली ने कुछ नहीं कहा, लेकिन उसकी आंखों में आंसू आ गए थे। उसे भी डेविड से अलग होते हुए बड़ा दुःख हो रहा था। थोड़ी देर बाद गाड़ी आई और फिर पेगटी के साथ डेविड गाड़ी में जा बैठा। जब तक गाड़ी बहुत दूर नहीं हो गई, डेविड खिड़की में से सिर निकालकर एमली को देखता रहा।

यहां रहते हुए डेविड अपने घर की बात बिलकुल भूल गया था। लेकिन जैसे ही गाड़ी चलने लगी तो डेविड को अपनी मां की याद आने लगी। मां से मिलने के लिए उसका मन बेचैन हो उठा। अब वह यही सोच रहा था कि कब गाड़ी घर पर पहुंचे और कब मैं मां से मिलूं। ऐसा लगता था, जैसे रास्ता कभी खत्म ही नहीं होगा, लेकिन अन्त में किसी तरह गाड़ी घर पहुंच गई।

जैसे ही गाड़ी घर के दरवाज़े पर रुकी, डेविड कूदकर नीचे उतर आया। वह अपनी मां से मिलने के लिए बहुत उतावला था। जल्दी-जल्दी पेगटी के साथ वह अन्दर दाखिल हुआ। लेकिन घर में पैर रखते ही उसे कुछ अजीब-सा लगा। बैठक का कमरा बिलकुल खाली पड़ा था। एक अनजाने नौकर ने आकर उनका सामान अन्दर पहुंचाया। डेविड ने कुछ घबराकर पूछा, "यह क्या ? मां क्या घर में नहीं हैं ?"

पेगटी ने उसके कन्धे पर हाथ रखकर कहा, "इस तरह घबराते क्यों हो ? अन्दर चलो, ज़रा आराम करें, फिर बातें होंगी। मैं तुम्हें सब बताती हूं।"

फिर पेगटी ने सारा सामान अन्दर रखवाया और डेविड को

रसोईघर में ले गई। डेविड को एक चौकी पर बिठाकर वह भी पास ही आ बैठी। डेविड आश्चर्य से उसके चेहरे की ओर देख रहा था। उसने डरते-डरते उससे पूछा, "क्या बात है पेंगटी ?"

पेंगटी ने उसका हाथ अपने हाथ में लेकर कहा, "डेविड, असल में बात यह है कि एक बहुत बड़ी खबर अब तक तुम्हें नहीं बताई गई है। तुम्हें मालूम है, तुम्हारे पिता फिर से आ गए हैं ?" यह सुनकर डेविड का चेहरा बिलकुल उतर गया। उसके होंठ कांपने लगे। लेकिन थोड़ी ही देर में उसका भ्रम दूर हो गया। पेंगटी ने उसे बताया, "डेविड, तुम्हारी मां ने दूसरी शादी की है।"

"दूसरी शादी ?"

पेंगटी ने एक गहरी सांस लेकर कहा, "हां डेविड, चलो, अब अपने पिता से मिल लो !" यह कहकर उसने हाथ पकड़कर उसे उठाना चाहा।

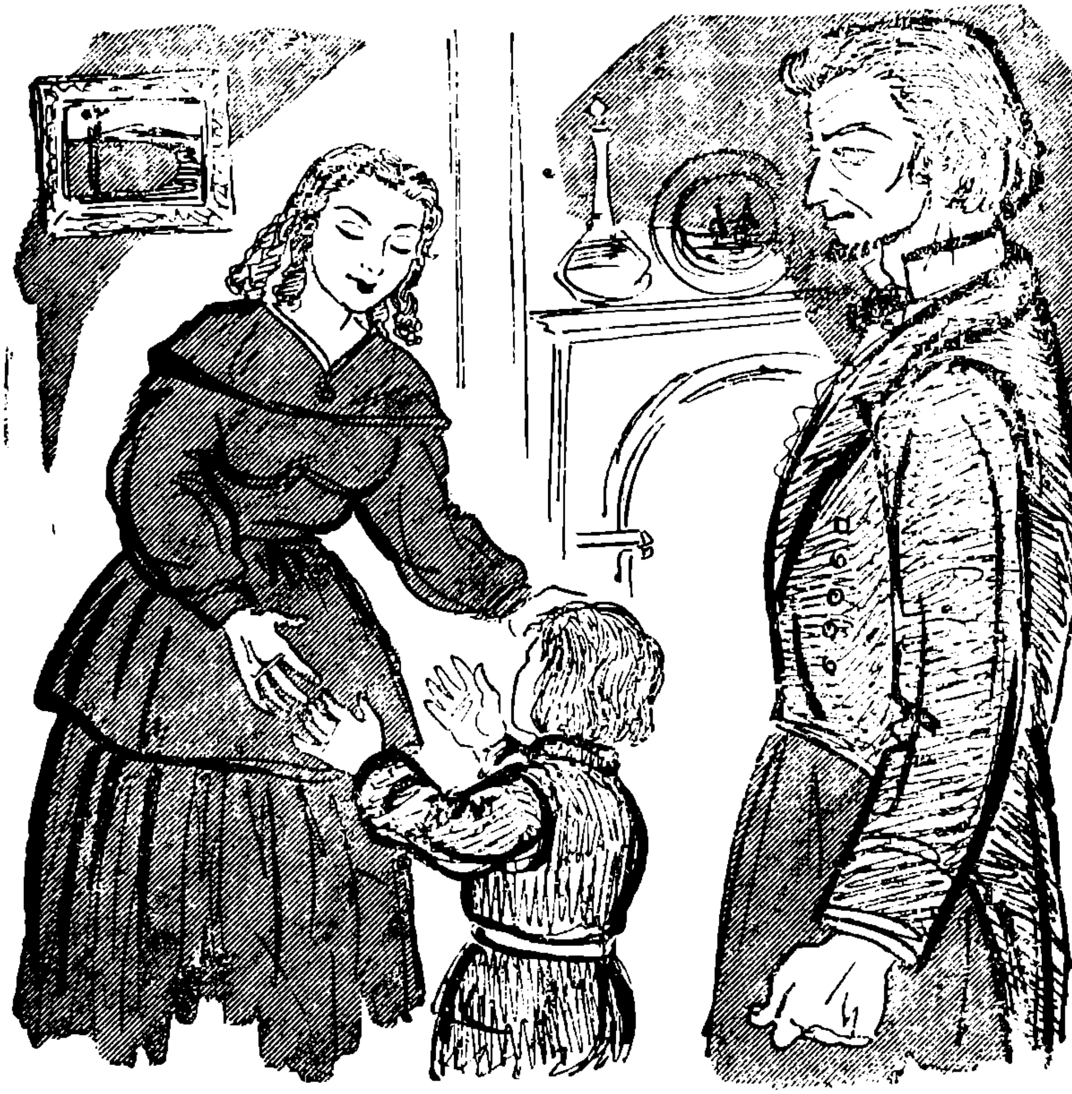
लेकिन डेविड ने उसका हाथ झटक दिया और नाराज़ होकर कहा, "नहीं, मुझे नहीं जाना है।"

"लेकिन क्या अपनी मां से नहीं मिलोगे ?"

इस बार डेविड कोई जवाब नहीं दे सका। भला ऐसा कैसे हो सकता था कि वह अपनी मां से न मिले ! वह चुपचाप उठकर पेंगटी के पीछे-पीछे चल पड़ा।

अन्दर बैठक में उसकी मां बैठी थी और उसके पास ही मि० मर्डस्टन बैठे थे। डेविड को देखते ही उसकी मां उससे मिलने के लिए दौड़कर आगे बढ़ी। लेकिन उसके चेहरे पर खुशी के साथ-साथ कुछ संकोच का भाव भी था। उसने डेविड को प्यार से अपने पास खींचा था कि मि० मर्डस्टन ने बीच में ही कहा, "क्लारा, छोटे बच्चों को बहुत ज़्यादा प्यार करना ठीक नहीं होता, इससे उनकी आदत खराब हो जाती है।"

फिर उसने डेविड से पूछा, "क्यों डेविड, क्या हाल है ?" लेकिन डेविड ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने धीरे से अपना



हाथ आगे बढ़ा दिया। फिर वह धीरे-धीरे अपनी मां के पास गया। और एकदम से उससे लिपटकर रोने लगा।

क्लारा ने उसे सीने से लगा लिया और उसके सिर पर हाथ फेरना शुरू किया। लेकिन डेविड न तो अपनी मां की ओर देख सका और न अपने नये पिता की ओर। थोड़ी ही देर में वह कमरे से बाहर हो गया।

4



डेविड को यह देखकर बड़ा अफसोस हुआ कि घर की हर चीज़ बदल गई थी। जिस कमरे में वह सोता था, वह भी बदल दिया गया था। अब उसका सोने का कमरा मां के कमरे से बहुत दूर घर के पिछले हिस्से में था।

जब वह फिर से नीचे बरामदे में पहुंचा तो अचानक पीछे से एक कुत्ता उसपर झपट पड़ा। अगर वह बंधा न होता तो डेविड पर टूट पड़ता। बड़ा भयानक कुत्ता था वह! देखने में इतना डरावना कि पास जाने की हिम्मत नहीं होती थी। वह मि० मर्डस्टन का पालतू कुत्ता था। डेविड उछलकर कुत्ते से बच तो गया, लेकिन यह सब देखकर उसे बड़ा अफसोस हो रहा था। उसे ऐसा लगता था जैसे अपने ही घर में वह पराया हो गया हो। किसीको उसकी फिक्र नहीं थी। उसकी मां उसे बहुत चाहती थी, लेकिन जैसे वह अब बदल गई थी। डेविड कुछ-कुछ समझता था कि उसकी मां अब स्वतंत्र नहीं है।

शाम को डेविड ने सुना कि उस दिन मि० मर्डस्टन की एक बहन आने वाली थी। वे लोग खाना खाकर बैठक में बैठे ही थे कि इतने में एक गाड़ी दरवाज़े पर आ खड़ी हुई। मर्डस्टन फौरन दौड़ता हुआ नीचे उतर गया। क्लारा भी डेविड को साथ लेकर नीचे उतरी।

रास्ते में कोई सुन न सके इस तरह क्लारा ने धीरे से डेविड को समझाया कि अब आगे से उसे मि० मर्डस्टन का कहना मानना चाहिए। दरवाजे तक वह डेविड का हाथ पकड़कर गई, लेकिन

मर्डस्टन के पास पहुंचते ही उसने डेविड का हाथ छोड़ दिया। मर्डस्टन की बहन की गाड़ी आ पहुंची थी। जब वह गाड़ी से उतरी तो डेविडने उसे देखा कि उसका चेहरा मर्डस्टनसे मिलता-जुलता था। उसने डेविड की मां को देखते ही उसे पहचान लिया और फिर डेविड की ओर अंगुली उठाकर कुछ चिढ़ते हुए कहा, "क्या यही वह लड़का है ?"

क्लारा कुछ सकुचाकर बोली, "हां।"

मिस मर्डस्टन ने कहा, "छोटे बच्चे मुझे बिलकुल अच्छे नहीं लगते !" फिर उसने बहुत रूखी आवाज़ में डेविड से कहा, "क्यों छोकरे, क्या हाल है ?"

यह सब डेविड को बिलकुल अच्छा नहीं लगा। वह चुप रहा।

मिस मर्डस्टन भौंहें सिकोड़कर उसकी ओर देखती रही और फिर उसके साथ अन्दर चली गई।

दूसरे दिन बहुत जल्दी ही मुर्गे की बोली सुनकर मिस मर्डस्टन जाग गई और फिर एक घंटी बजाकर उसने सबकी नींद उड़ा दी। डेविड की मां झटपट तैयार होकर नाश्ता बनाने के लिए रसोईघर में पहुंच गई। लेकिन मिस मर्डस्टन वहां पहले से ही मौजूद थी। उसने हंसकर कहा, "क्लारा, आज से तुम्हें कोई काम नहीं करना है। मैं सारा काम कर लूंगी। इसीलिए तो मैं आई हूं ! तुम तो बिलकुल बच्ची हो। अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है ! तुमसे इतना काम नहीं होगा। मुझे घर की चाबी दे दो और जाओ, आराम करो।" क्लारा कुछ नहीं बोली। वह बोलती भी क्या ! उसने चुपचाप चाबी दे दी।

इस तरह दूसरे ही दिन मिस मर्डस्टन ने पूरे घर पर कब्ज़ा कर लिया। वह क्लारा से कुछ पूछती-पाछती नहीं थी। अपने मन के मुताबिक सारा काम करती थी। पहले तो क्लारा चुपचाप देखती रही। लेकिन बाद में उसे भी यह सब बहुत बुरा लगा, पर अब वह कर ही क्या सकती थी ! वह जैसे अपने ही घर में

मेहमान हो गई थी। दिन-भर मिस्टर मर्डस्टन और उसकी बहन बैठे-बैठे गुपचुप न जाने क्या बातें किया करते थे। एक दिन जब वे रात में इसी तरह कुछ बातें कर रहे थे तो क्लारा वहां जा पहुंची और ज़ोर से रो पड़ी। उसने रोते-रोते कहा, "यह सब मुझसे नहीं सहा जाएगा। मैं अपने ही घर में।" यह कहकर वह फिर रो पड़ी।

"क्या कहा? अपना घर!" मर्डस्टन ने सख्त आवाज़ में कहा।

क्लारा ने फौरन अपनी गलती सुधार ली और कुछ डरते-डरते कहा, "हां, हम लोगों का अपना घर। मैं यह सब क्यों कह रही हूं आप जानते ही हैं। आपके घर का कोई काम-काज करने का मुझे हक नहीं है? यह सब क्यों हो रहा है, मेरी समझ में नहीं आता। शादी के पहले तो मैं अकेली ही घर का सारा काम-काज देखती थी। तब तो मुझे किसी की मदद की ज़रूरत नहीं थी। आपको अगर विश्वास न हो तो पेगटी से पूछ लीजिए! अब ज़बरदस्ती मुझे सारे काम से अलग कर दिया है।" यह कहते-कहते वह फूट-फूटकर रोने लगी।

मिस मर्डस्टन बोली, "भैया, मेरी वजह से ही अगर तुम लोगों को दिक्कत होती हो तो मैं यहां नहीं रहूंगी। मैं तुम्हारे जीवन में अशान्ति नहीं पैदा करना चाहती। मैं यहां से चली जाऊंगी, तुम दोनों सुख से रहो।"

मर्डस्टन ने अपनी बहन को समझाते हुए कहा, "बहन, तुम चुप रहो। इसकी बात पर ध्यान न दो। क्लारा, तुम्हारी यह हिम्मत देखकर मुझे ताज्जुब हो रहा है!"

अपने भाई को अपना पक्ष लेते देखकर मिस मर्डस्टन आंखों से रूमाल लगाकर रोने लगी। क्लारा की तरफ देखते हुए मर्डस्टन ने कहा, "क्लारा, तुम्हें आज हो क्या गया है? तुम्हें छोटी समझकर और यह देखकर कि इतने बड़े घर का काम तुमसे अकेले नहीं होगा मैंने अपनी बहन को यहां बुलाया था। इसने हंसते-

हंसते घर का सारा काम-काज संभाल लिया। लेकिन तुम तो कुछ और ही समझ बैठी हो। तुम्हें तो इनका एहसान मानना चाहिए था, उल्टे तुम तरह-तरह की बातें बक रही हो। तुममें कुछ अक्ल है भी या नहीं ?"

अपने पति की बात सुनकर क्लारा फिर से रो पड़ी और विनती करते हुए बोली, "मैं आपके पैर पड़ती हूं, इस तरह मुझ-पर नाराज़ न होइए।"

मर्डस्टन बोली, "मैंने अपनी बहन को पहले ही कह दिया था कि क्लारा का मन बदल गया है। तुममें ज़रा भी दया-माया और शिष्टता नहीं रह गई है !" अब तो क्लारा और भी रोने लगी। लेकिन मर्डस्टन ने उस ओर कोई ध्यान नहीं दिया और कहा, "देखो क्लारा, इस तरह नाटक मत करो ! यों झूठ-मूठ रोने से कोई बात नहीं बनेगी।"

क्लारा ने सिसकते-सिसकते कहा, "मैं अपनी गलती के लिए माफी चाहती हूं। सचमुच मुझसे बड़ी भूल हुई है। न जाने कैसे मैं यह सब कह गई। जेन, अब मैं किसी दिन तुम्हें कुछ नहीं कहूंगी। अब तुम हम लोगों को छोड़कर चली जाओगी तो हमें बड़ा दुःख होगा। मेरी गलती के लिए मुझे माफ कर दो।"

मर्डस्टन ने भी, जैसे सारा अपराध क्लारा का ही हो, इस तरह क्लारा को दो-एक खरी-खोटी और सुनाईं और फिर अपनी बहन से क्लारा को माफ कर देने के लिए कहा और उसने क्लारा को माफ कर दिया।

डेविड वहां बैठा था। वह चुपचाप यह सब देखता रहा था। अपनी मां का यह अपमान देखकर उसकी आंखों में आंसू आ गए। वह फौरन वहां से बाहर निकल गया। अपने कमरे में जाकर वह सीधे बिस्तरे पर पड़ गया। पेगटी उसके कमरे में दीया रखने के लिए आई तो उसने उसे भी मना कर दिया। इस समय वह किसीसे बात नहीं करना चाहता था।

मर्डस्टन और उसकी बहन जेन इस प्रश्न पर कई दिनों से

विचार कर रहे थे कि डेविड को किसी बोर्डिंग में रख दिया जाए। इस सम्बन्ध में उन्होंने क्लारा से अभी तक कुछ नहीं कहा था। लेकिन वे लोग मन में यह तय कर चुके थे कि डेविड को किसी तरह यहां से अलग कर दिया जाए। इधर मर्डस्टन ने डेविड को कुछ पढ़ाना भी शुरू किया। लेकिन यह पढ़ाई क्या होती, डेविड के लिए तो जैसे कोई सज़ा भुगतनी होती।



5

एक दिन सवेरे डेविड कागज़-कलम लेकर अपना पाठ तैयार कर रहा था। पास ही क्लारा बैठी थी, कुछ दूरी पर मर्डस्टन हाथ में एक किताब लिए कुर्सी की पीठ से सिर टिकाए सो रहा था। लेकिन इतने पर भी डेविड को मन में बड़ा डर लगता था। मर्डस्टन को देखकर वह कांप उठता था। कुछ दूरी पर बरामदे में जेन बैठी कोई काम कर रही थी। डेविड बार-बार किताब में से सिर निकालकर उसकी ओर भी देख लेता था। वह इन दोनों के नाम से कांप उठता था। जैसे ही इन दोनों में से किसीकी याद आती थी तो वह अपना पाठ भूल जाता था। इस समय हालांकि दोनों अपने-अपने काम में लगे थे और उनका ध्यान डेविड की तरफ नहीं था, फिर भी डेविड रह-रहकर चौंक पड़ता था।

कुछ देर तक पाठ याद करने के बाद डेविड ने किताब अपनी मां के हाथ में दे दी और पाठ सुनाना शुरू किया। कुछ देर तक तो वह सुनाता रहा, लेकिन इतने में मर्डस्टन की नींद खुल गई और जैसे ही डेविड ने उसे अपनी ओर देखते हुए देखा तो सारा पाठ भूल गया। डर के मारे उसकी आवाज़ कांपने लगी। डेविड की मां बोली, "नहीं, तुम भूल गए डेविड !"

यह सुनकर मर्डस्टन ने ज़रा सख्ती से कहा, "क्लारा, तुम लड़के की आदत को खराब कर रही हो। इस तरह कहने से काम नहीं चलेगा। पढ़ना-लिखना कोई आसान काम नहीं है। इसने पाठ याद किया है या नहीं ?"

क्लारा कोई जवाब दे इसके पहले ही मिस मर्डस्टन बोल उठी, "नहीं। दिन-भर खेलता तो रहता है। पाठ कहां से याद होगा ?"

मर्डस्टन ने कहा, "इसको किताब दे दो और फिर से याद करने को कहो। कल मैं सब सुनूंगा।"

क्लारा ने उसे किताब दे दी। डेविड की जान में जान आई। उसने फिर से पाठ याद करना शुरू किया। लेकिन अभी तक उसकी आवाज़ कांप रही थी। क्लारा को यह देखकर अपने बेटे पर बड़ी दया आई। उसकी इच्छा हुई कि उसके सिर पर प्यार से हाथ फेर दे। लेकिन मर्डस्टन और उसकी बहन के डर से वह ऐसा न कर सकी।

दूसरे दिन सवेरे मर्डस्टन ने डेविड को अपने पास बुलाया और पाठ पूछना शुरू किया। क्लारा भी वहीं बैठी थी। मर्डस्टन ने एक बहुत ही कठिन वाक्य का अर्थ डेविड से पूछा लेकिन डेविड नहीं बता सका। मर्डस्टन को गुस्सा आ गया। उसने फौरन एक छड़ी उठाई और खड़े होते हुए कहा, "इसमें क्लारा का क्या दोष ? यह लड़का बिलकुल बिगड़ गया है। पढ़ाई-लिखाई में इसका मन नहीं लगता। अभी मैं इसकी दवा करता हूं।"

यह कहकर उसने डेविड का हाथ पकड़ लिया। क्लारा ने रोकना चाहा, लेकिन उसकी हिम्मत नहीं हुई। मर्डस्टन डेविड को खींचते हुए दूसरे कमरे में ले गया। क्लारा ने भी पीछे-पीछे जाने की कोशिश की, लेकिन जेन ने आगे आकर उसे रोक दिया और कहा, "तुम यहीं बैठो क्लारा। तुम्हें पता नहीं कि लड़कों को किस तरह पाला जाता है। सचमुच तुमने इस लड़के की आदत खराब कर रखी है। इतना दुलार किस काम का !"

क्लारा वहीं खड़ी रह गई, लेकिन वह अपनी रुलाई नहीं रोक सकी। दूसरे कमरे में डेविड को भी अपनी मां के रोने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। मर्डस्टन ने डेविड को कमरे में घसीटकर ज़मीन पर पटक दिया और बेंत से पीटना शुरू किया।



मारे दर्द के डेविड चीखने लगा और बोला, "मिस्टर मर्डस्टन, मुझे छोड़ दो। अब मत मारो, मैं अपना पाठ ठीक से याद कर लेता हूं, लेकिन आपके सामने आने पर सब भूल जाता हूं। दया करो, मुझे छोड़ दो।"

मर्डस्टन ने उसे और पीटते हुए कहा, "ठीक है, मैं ऐसी दवा किए देता हूं कि आगे से तुम बिलकुल नहीं भूल सकोगे।" यह

कहकर मर्डस्टन ने उसे और ज़ोर से पीटना शुरू किया। डेविड 'हाय-हाय' करता रहा। उसकी चीखों से पूरा घर गूंज उठा। मार से बचने का और कोई रास्ता न देखकर डेविड ने अचानक मर्डस्टन का हाथ पकड़ लिया और अपने दांत उसपर गड़ा दिए।

अब क्या था, मर्डस्टन का गुस्सा और भी भड़क उठा। उसने उसे इतना पीटा कि वह मार खाते-खाते बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ा। मर्डस्टन ने बाहर आकर कमरे में ताला डाल दिया।

इस तरह उस घर में एक-एक दिन डेविड के लिए भारी होता जा रहा था। पांच दिन में ही उसे इतनी तकलीफ उठानी पड़ी जितनी किसी कैदखाने में भी नहीं होती। मौके-बेमौके मि० मर्डस्टन की बहन भी उसे तंग करने से नहीं चूकती थी। वह उसे बगीचे में खेलने भी नहीं देती थी और दिन-रात एक चौकीदार की तरह उसपर नज़र रखती थी। यहां तक कि वह उसे उसकी मां क्लारा और नौकरानी पेगटी से भी अकेले में नहीं मिलने देती थी। पांच दिन बाद एक दिन आधी रात को अचानक डेविड की नींद खुल गई। उसने सुना कि कोई दबी आवाज़ में उसे पुकार रहा है। उसने देखा कि पेगटी अंधेरे कमरे में एक कोने में खड़ी थी और धीमी आवाज़ में पुकार रही थी।

आश्चर्य से उसने कहा, "कौन ? पेगटी ?"

"हां डेविड, मैं ही हूं। ज़रा धीरे से बोलो, कहीं तुम्हारी आवाज़ सुनकर वह दुष्ट जेन यहां न आ पहुंचे।"

डेविड ने धीरे से पूछा, "अच्छा, यह बताओ, क्या मां भी मुझसे नाराज़ है ? वह अब मेरे पास नहीं बैठती। मुझसे दूर-दूर ही रहती है।"

"नहीं बेटा, तुम्हारी मां तुमपर नाराज़ नहीं है लेकिन अब वह पहले जैसी आज़ाद नहीं है। तुम तो जानते ही हो कि मि० मर्डस्टन उसे तुम्हारे पास नहीं आने देना चाहते।"

डेविड ने कहा, "अच्छा पेगटी, तुम्हें तो मालूम होगा कि ये लोग मुझे कहां भेजना चाहते हैं ? क्योंकि मैंने अक्सर मि० मर्डस्टन और जेन को आपस में इस बात पर बहस करते देखा है। उनकी बातों से मुझे लगता है कि वे मुझे यहां से निकालकर कहीं दूर भेज देना चाहते हैं। मेरा मन भी यहां नहीं लगता।"

पेगटी उसके सिर पर हाथ फेरती हुई बोली, "ये लोग तुम्हें बाहर पढ़ने भेजने वाले हैं। लंदन के पास ही एक स्कूल है, जिसमें लड़के रखे भी जाते हैं। शायद वहीं तुम्हें रखेंगे।"

डेविड ने पूछा, "कब भेजेंगे ?"

वह बोली, "शायद कल ही भेजने वाले हैं। लेकिन डेविड तुम मेरी एक बात ज़रा ध्यान से सुन लो। सुन रहे हो न !"

डेविड ने भरे हुए गले से कहा, "हां।"

"देखो डेविड, तुम अपनी मां की कोई चिन्ता न करो। और जबकि ये लोग तुम्हें दूर भेजने के लिए पहले ही तय कर चुके हैं तो तुम चले जाओ। तुम्हारी मां की देखभाल मैं करती रहूंगी। मैं उसे छोड़कर कभी नहीं जाऊंगी। मुझे लिखना-पढ़ना नहीं आता, लेकिन फिर भी मैं तुम्हें चिट्ठी लिखाती रहूंगी और सारी खबर देती रहूंगी। अच्छा बताओ, तुम मुझे भूलोगे तो नहीं ? मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूंगी।" यह कहते-कहते उसे रोना आ गया और वह चुपचाप वहां से चली गई।

दूसरे दिन मि० मर्डस्टन ने डेविड से कहा, "तुम्हें स्कूल में पढ़ने जाना है।"

इसके बाद उन्होंने उसे हुक्म दिया कि वह कपड़े वगैरह पहन-कर तैयार हो जाए। जब वह नीचे पहुंचा तो उसने देखा कि उसकी मां बहुत ही उदास होकर एक कोने में बैठी थी। डेविड ने आगे बढ़कर अपनी मां से लिपटते हुए कहा, "मां, मुझे माफ कर दो।"

क्लारा ने अपनी आंखें पोंछते हुए कहा, "डेविड, बेटा, मैंने तुम्हें माफ कर दिया है। अब आगे से अच्छा लड़का बनने की

कोशिश करना, जिन लोगों को मैंने अपना सम्बन्धी बनाया है, उन्हें तुम कभी दुःख मत देना।"

यह कहकर क्लारा प्यारसे अपने बच्चे के सिर पर हाथ फेरने लगी। वह धीरे से कुछ कहने ही जा रही थी कि इतने में उसकी नज़र जेन पर पड़ गई, जो एक कोने में खड़ी उन दोनों की ओर घूर रही थी। यह देखकर क्लारा चुप रह गई। कुछ देर बाद बाहर एक गाड़ी आ खड़ी हुई।

जेन डेविड का हाथ पकड़कर उसे गाड़ी में बिठा आई। डेविड अपनी मां से कुछ कह-सुन भी नहीं सका। उसने एक बार अपनी मां की ओर देखा और फिर वह चुपचाप गाड़ी में जाकर बैठ गया। क्लारा उसकी गाड़ी के पास आकर बोली, "देखो, बेटा, तुम्हारे भले के लिए तुम्हें स्कूल भेजा जा रहा है। मुझे उम्मीद है कि जब तुम छुट्टी में घर आओगे तब अच्छे लड़के बन जाओगे!"

मर्डस्टन ने भी डेविड को अपनी गलती पर पश्चात्ताप करने के लिए कहा। डेविड सब कुछ सुनता रहा और फिर गाड़ी चल पड़ी।



6

कुछ दूर आगे चलकर गाड़ी खड़ी हो गई। डेविड चुपचाप बैठा-बैठा रोता रहा। उसने अपना रूमाल निकालकर आंखें पोंछ डालीं। गाड़ी की खिड़की से बाहर नज़र जाते ही वह चौंक उठा। उसने देखा कि पेगटी दौड़ी चली आ रही है। वह पास आ पहुंची और गाड़ी में चढ़आई। उसने डेविड को अपने सीने से लगा लिया और बार-बार उसका गाल चूमना शुरू किया। पेगटी की आंखों से आंसू बह रहे थे। फिर उसने मिठाई की एक पुड़िया निकालकर डेविड के हाथ पर रख दी और रुपयों की एक छोटी-सी थैली डेविड की जेब में डाल दी। उसने कुछ कहना चाहा, लेकिन उसके गले से जैसे आवाज़ नहीं निकल सकी। वह गाड़ी से नीचे उतर गई और उसी तरह दौड़ती हुई लौट गई।

गाड़ी वाला यह सब देखकर चकित रह गया। लेकिन उसके चेहरे से ऐसा लगता था कि वह पेगटी को पहचानता है। उसने डेविड से पूछा, "क्यों, यह फिर आएगी ?"

डेविड ने सिर हिलाकर कहा, "नहीं, अब नहीं आएगी।"

यह सुनकर गाड़ीवान ने घोड़ों पर चाबुक फटकारना शुरू कर दिया। दोनों घोड़े बहुत अच्छी नस्ल के थे। मालिक का हुक्म पाते ही वे तेज़ी से दौड़ने लगे। इस गाड़ीवान का नाम था बार्किस, यह बड़ा चुप्पा आदमी था। बिना ज़रूरत के बोलता ही नहीं था। डेविड ने उससे बातचीत करने के लिए एक मिठाई उसके हाथ में रख दी। गाड़ीवान ने चुपचाप बिना कुछ कहे पूरी मिठाई अपने मुंह में रख ली। फिर काफी देर बाद वह अपने से ही बोला, "क्या

उसने खुद ही बनाई है ?"

डेविड बोला, "किसने, तुम पेगटी के बारे में कह रहे हो ?"

"हां ।"

"पेगटी तो बहुत अच्छी मिठाइयां बनाती है। ये सब उसीके हाथ की बनाई हुई हैं। वह हमारे घर रसोई बनाती है।"

कोचवान फिर चुप हो गया। डेविड की समझ में ही नहीं आया कि अब किस तरह इससे बात की जाए। इतने में कोचवान फिर अपने-आप ही बोला, "देखो, तुम जाकर उसके नाम चिट्ठी ज़रूर लिखना, लिखोगे न ?"

"हां-हां, क्यों नहीं ? वह मुझे बहुत चाहती है।"

फिर कोचवान ने बहुत सकुचाते हुए कहा, "अगर तुम उसको कभी चिट्ठी लिखो तो उसमें इतना ज़रूर लिख देना कि बार्किस अब भी तैयार है।"

डेविड ने दो-तीन बार उसकी बात को मन में दुहरा लिया ताकि उसे याद रख सके और कहा, "बार्किस अब भी तैयार है, बस, इतना ही लिखना है न ?"

"हां, हां, बस इतना ही लिख दो तो बहुत बड़ी बात हो।"

डेविड बोला, "लेकिन तुम तो अभी लौटकर गांव जाओगे न ?"

बार्किस कुछ देर चुप रहने के बाद फिर बोला, "हां हां, लेकिन यह बात तुम ही लिख देना।"

दूसरे दिन यारमाउथ पहुंचकर डेविड एक जगह ठहरा। वहां से दूसरी गाड़ी में जाना था। गाड़ी अभी तैयार होकर नहीं आई थी, इसलिए उसने पेगटी के नाम एक चिट्ठी लिखना शुरू किया। चिट्ठी में उसने लिखा—"मैं यहां तक आराम से पहुंच गया हूं। बार्किस ने मुझसे कहा है कि मैं तुमको लिख दूं कि वह अब भी तैयार है। सब लोगों को मेरा प्रणाम कहना—तुम्हारा डेविड।"

दोपहर को तीन बजे दूसरी गाड़ी आई और डेविड उसमें बैठकर रवाना हो गया। दूसरे दिन सवेरे आठ बजे वह लन्दन

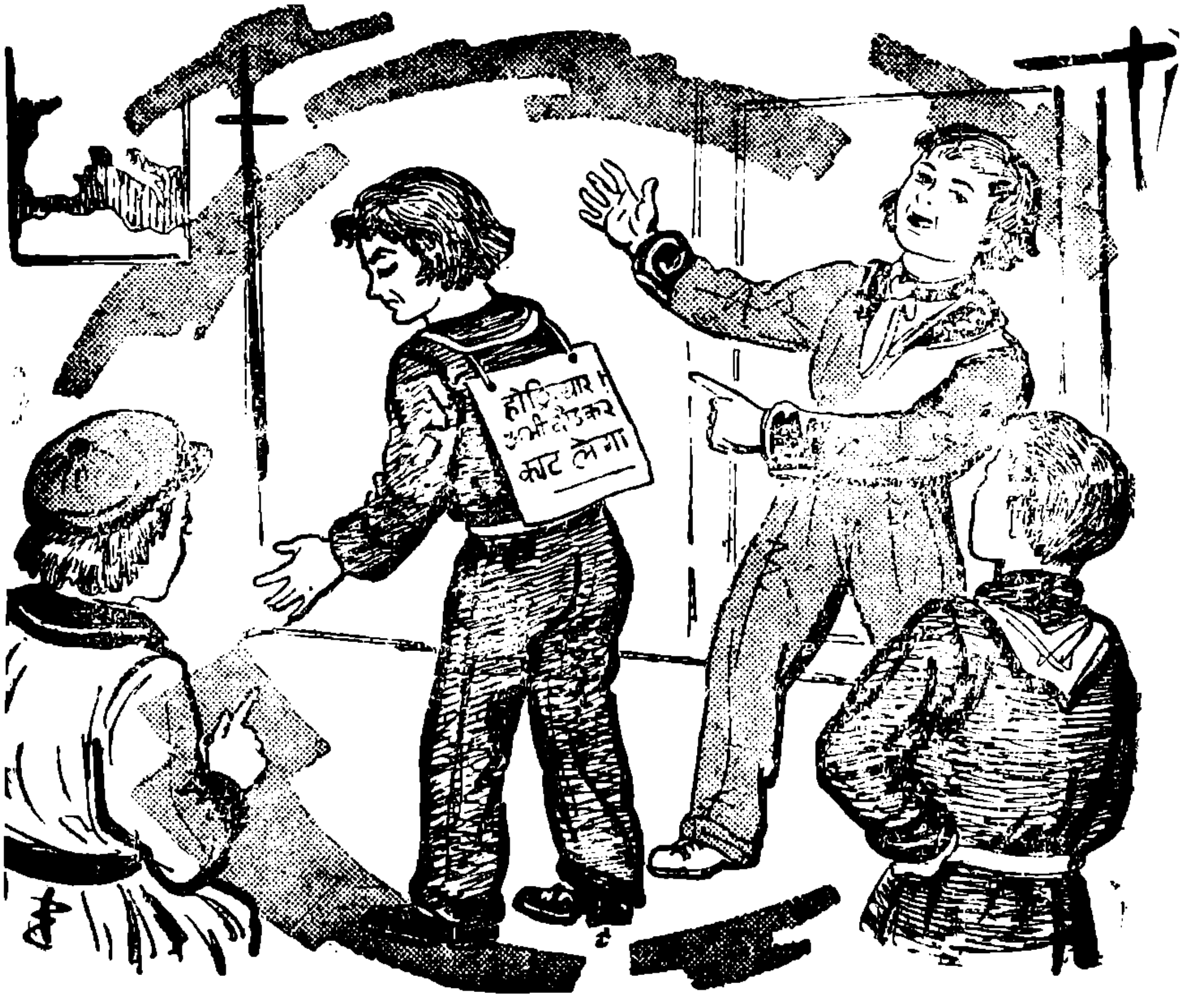
पहुंच गया। वहां से वह सलेम हाउस नामक एक जगह पहुंचा। यहां एक बड़ा स्कूल था। पास ही उसका छात्रावास भी था। बड़ी भारी इमारत थी, जिसके आस-पास एक ऊंची-सी दीवार खिंची हुई थी। उसके अन्दर जाने को डेविड का मन नहीं हो रहा था। इमारत काफी पुरानी थी, इसलिए डेविड को और भी डरावनी-सी लग रही थी।

उसे स्कूल में भर्ती कर लिया गया। रह-रहकर उसे अपनी मां और पेगटी की याद आ जाती थी। अक्सर वह रात में सोते-सोते अचानक उठ पड़ता था और चुपचाप रोने लगता था। उसने सुना कि छह महीने बाद स्कूल में छुट्टी होगी और तभी वह घर जा सकेगा। इससे उसको और भी ज़्यादा घबराहट हुई। रोज़ वह दिन गिनता रहता था कि कब घर जाने का मौका मिलेगा।

पहले दिन जब डेविड अपनी कक्षा में दाखिल हुआ तो उसने देखा कि सामने तख्ते पर लिखा था, "होशियार ! अभी दौड़कर काट लेगा !" डेविड ने सोचा कि शायद यह किसी कुत्ते के बारे में लिखा है, जो बड़ा खतरनाक मालूम होता है। उसने इधर-उधर देखा। उसे बड़ा डर लग रहा था। लेकिन कहीं भी उसे कुत्ता नज़र नहीं आया। उसने अपने साथियों से पूछा, "यह कुत्ता कहां है ?"

डेविड की बात सुनकर लड़के हंस पड़े और खूब हंसे। इसके बाद एक लड़के ने एक बड़े-से कागज़ पर ये शब्द लिखे, "होशियार ! अभी दौड़कर काट लेगा !" और कागज़ उसके गले में लटका दिया। कक्षा के अध्यापक ने भी आज्ञा दी कि इस कागज़ को उसे पांच दिन तक अपनी पीठ पर लटकाना पड़ेगा। अब जाकर डेविड को मालूम हुआ कि मि० मर्डस्टन ने उस दिन उसका हाथ काट लेने की बात यहां के लोगों को भी बता दी थी।

यह जानकर डेविड को बड़ी शर्म आई। किसीको अपना मुंह दिखाने की उसे हिम्मत नहीं हो रही थी। उसके साथी हमेशा इसी बात को लेकर उससे मज़ाक किया करते थे और उसे मौके-



बेमौके चिढ़ाते रहते थे। ऐसी जगह डेविड एक दिन भी नहीं रहना चाहता था। स्कूल का हेडमास्टर तो और भी भयानक था। उसे देखकर रही-सही हिम्मत भी छूट जाती थी। इस हालत में डेविड को अपनी मां और पेगटी की बहुत याद आती थी। जब भी उनकी उसे याद आती तो उसकी आंखों में आंसू भर आते थे।

एक-एक दिन पहाड़ की तरह कटा और इस तरह छह महीने भी बीते। स्कूल में छुट्टी हुई। डेविड उसी दिन गाड़ी में बैठकर घर की ओर चल पड़ा। लेकिन जब वह यारमाउथ में पहुंचा तो वहां बार्किस पहले ही से अपनी घोड़ागाड़ी लिए तैयार खड़ा था। वह उसकी राह देख रहा था। डेविड को ऐसा लगा जैसे कि छह महीने पहले नहीं बल्कि कुछ मिनट पहले वह बार्किस से अलग

हुआ था। बार्किस ने उसका सामान गाड़ी में रखा। फिर उसे अन्दर बैठाकर उसने घोड़ों को हांक दिया।

जब गाड़ी चल पड़ी तो डेविड ने उससे कहा, "बार्किस, मैंने अपनी पहली चिट्ठी में ही पेगटी को तुम्हारी बात लिख दी थी। क्या इस बीच तुम उससे मिले थे?"

बार्किस ने इसके जवाब में धीरे से कहा, "नहीं।" बस इतना कहकर वह चुप हो गया। काफी देर तक चुप रहने के बाद वह बोला, "उसे ही जवाब देना चाहिए था। जब एक आदमी यह लिखता है कि वह अब भी तैयार है तो इसका तो यही मतलब होता है न कि अभी वह जवाब की आशा लगाए हुए है।"

डेविड बोला, "हां, और क्या! मैं जाकर उससे कहूंगा कि बार्किस तुम्हारे जवाब की राह देख रहा है। है न?"

कुछ देर चुप रहकर बार्किस ने कहा, "उसका नाम क्या है?"

"पेगटी।"

"उसका असली नाम है या नकली?"

"असली ही है, उसका पूरा नाम है क्लारा पेगटी।"

इसके जवाब में बार्किस कुछ नहीं बोला। कुछ देर तक गाड़ी चुपचाप चलती रही। थोड़ी दूर तक आगे जाने पर बार्किस ने एक जगह गाड़ी रोक दी और अपनी जेब से खड़िया का एक टुकड़ा निकालकर उसने गाड़ी के पटरे पर लिखा—"क्लारा पेगटी"। उसे शायद डर था कि कहीं वह इस नाम को भूल न जाए।

गाड़ी जब घर के सामने आकर रुकी तो डेविड को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसे लेने के लिए कोई बाहर नहीं निकला। वह अपना सामान लेकर अन्दर गया, तब भी उसे कोई नहीं मिला। वह कुछ घबराने लगा। उसे डर लग रहा था कि कहीं पहले ही मि० मर्डस्टन और उसकी बहन के साथ उसकी मुलाकात न हो जाए।

वह धीरे-धीरे एक-एक कमरा देखते हुए आगे बढ़ने लगा लेकिन इतने पर भी किसीसे उसकी मुलाकात नहीं हुई। अपनी मां के कमरे में उसने देखा कि एक मोमबत्ती जल रही है और कमरे में बहुत हल्का प्रकाश फैला है। उसने देखा कि उसकी मां गोद में एक छोटे-से बच्चे को लिए बैठी है। वह गाना गाकर उसे सुलाने की कोशिश कर रही है। डेविड धीरे-धीरे कमरे में गया और अपनी मां के सामने जा खड़ा हुआ। उसकी मां ने उसे गले से लगा लिया और फिर उसे छोटे-से बच्चे को दिखाकर कहा, "यह तुम्हारा छोटा भाई है!"

डेविड ने बड़े प्यार से उस छोटे-से बच्चे को देखा। वह उसे पसन्द आ गया। वह उसके नन्हे-नन्हे गालों पर हाथ फेरने लगा और फिर उसे उठाकर खिलाने लगा। इतने में पेगटी भी वहां आ पहुंची। उसने आते ही डेविड को उठा लिया और उसे प्यार करना शुरू किया। मि० मर्डस्टन और उसकी बहन कहीं गए थे। पेगटी अपने काम-काज में लगी थी। किसी को मालूम ही नहीं था कि डेविड इतनी जल्दी आ पहुंचेगा। डेविड को यह सुनकर बड़ा सन्तोष हुआ कि मि० मर्डस्टन घर में नहीं हैं। पेगटी, डेविड और उसकी मां इतने दिनों बाद मौका पाकर दिल खोलकर बातें करने लगे।

कुछ देर बाद ही बाहर किसी गाड़ी के रुकने की आवाज़ आई। पेगटी ने इस बीच डेविड को खाना खिला दिया था। मि० मर्डस्टनके आने की तैयारी देखकरपेगटी ने डेविड को दूसरे कमरे में सुला दिया। डेविड आंख मूंदकर पड़ा रहा, लेकिन काफी देर तक उसे नींद नहीं आई। पिछले दिनों की बातें उसे याद आने लगीं। लेटे-लेटे ही वह मि० मर्डस्टन और उनकी बहन की आवाज़ सुनकर कांप उठता था।

किसी तरह छुट्टी के दिन बीते। इस बीच तीन-चारबार मि० मर्डस्टन ने उसके कान खींचे। जेन तो अक्सर उसे डांटा करती थी। इसलिए दिन-भर वह पेगटी के पास ही रहता था। अपनी

मां के पास भी वह बहुत कम उठता-बैठता था, क्योंकि मि० मर्डस्टन हमेशा वहां मौजूद रहते थे। अन्त में वहां से रवाना होने का दिन भी आ पहुंचा। वह चुपचाप गाड़ी में जाकर बैठ गया। उसकी मां अपने बच्चे को लेकर बगीचे में खड़ी थी और एकटक डेविड की ओर देख रही थी। गाड़ी चल पड़ी। जब तक उसकी मां उसे दिखाई देती रही, डेविड खिड़की से हाथ निकालकर उसकी ओर रूमाल हिलाता रहा।

7



इस बार पाठशाला में डेविड ने पढ़ने में मन लगाना शुरू किया। कुछ ही समय में कक्षा के दूसरे विद्यार्थियों से उसकी अच्छी मित्रता हो गई। अब कोई उसे चिढ़ाता नहीं था। वह भी सबसे मिल-जुलकर रहता था। इस तरह धीरे-धीरे दिन बीतने लगे। इसी बीच एक दिन डेविड की सालगिरह आ पहुंची।

उस दिन हेडमास्टर ने उसे अपने पास बुलाया। डेविड फौरन दौड़ता हुआ उनके पास जा पहुंचा। उसने सोचा कि शायद पेगटी ने सालगिरह पर उसके लिए कई तरह के उपहार भेजे होंगे, उन्हीं को देने के लिए हेडमास्टर ने उसे बुलाया है।

डेविड ने हेडमास्टर के कमरे में पहुंचकर देखा कि वे एक बड़ी-सी मेज़ के आगे बैठे थे। उनके सामने नाश्ता रखा हुआ था और पास ही एक छड़ी रखी हुई थी। एक कुर्सी पर उनकी पत्नी बैठी थी और अपने हाथ में एक कागज़ लेकर उसे पढ़ने की कोशिश कर रही थी।

हेडमास्टर ने डेविड को अपने पास ही बिठाया और उसके सिर पर हाथ फेरते हुए उसे तरह-तरह की सीख देनी शुरू की। उन्होंने कहा, "बेटा, दुनिया में आदमी को तरह-तरह की मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। तुम तो अभी छोटे ही हो, तुम्हारी समझ में यह सब कुछ नहीं आएगा। लेकिन फिर भी तुम्हें इसके लिए तैयार रहना चाहिए। बेटा, हमेशा ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिए। वह हमें हर तरह की मुसीबत झेलने की शक्ति देता है।"

डेविड की समझ में यह सब कुछ नहीं आया। वह हेडमास्टर का मुंह देखने लगा। अन्त में उन्होंने कहा, "अच्छा यह बताओ, तुम जब छुट्टी में घर गए थे और वहां से लौटे तो घर में सब लोग मज़े में थे न ?"

हेडमास्टर की पत्नी ने पूछा, "तुम्हारी मां उस समय बीमार तो नहीं थी ?"

यह सुनकर डेविड कांप उठा। वह कुछ कह नहीं सका। लेकिन न जाने क्यों उसका दिल ज़ोरों से धड़कने लगा। हेडमास्टर की पत्नी ने आगे कहा, "क्योंकि चिट्ठी आई है कि तुम्हारी मां की तबियत बहुत खराब है।"

मां की बीमारी की बात सुनकर डेविड बहुत घबराया। उसका चेहरा सफेद पड़ गया और आंखों में आंसू आ गए। इसी बीच हेडमास्टर की पत्नी ने कुछ डरते-डरते कहा, "लेकिन अभी-अभी खबर मिली है कि तुम्हारी मां अब नहीं रही !"

मां जाती रही !—डेविड को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। फिर वह एकदम चीख मारकर रो पड़ा। उसे लगा कि अब वह दुनिया में अकेला रह गया है। अब कोई ऐसा नहीं बचा था जिसे वह अपना कहकर पुकारता। अब वह बिलकुल अनाथ हो गया था। हेडमास्टर की पत्नी ने उसे खींचकर अपनी गोद में बैठा लिया और उसे हिम्मत बंधाने की कोशिश की। कई बार रोने के बाद डेविड किसी तरह चुप हुआ।

दूसरे दिन डेविड घर को रवाना हो गया। बेचारे को यह पता नहीं था कि वह आखिरी बार स्कूल छोड़ रहा है।

गाड़ी जब गांव में पहुंची और दूर से ही घर नज़र आने लगा तो डेविड की आंखों में आंसू आ गए। वह गाड़ी में ही फूट-फूटकर रोने लगा। उसे मां की याद आने लगी। यह सोचकर उसे और भी दुःख हो रहा था कि इसके पहले घर से आते समय वह अपनी मां से ठीक से मिल नहीं सका था। अब तो मां रही नहीं। अब कौन उसे प्यार से अपनी गोद में बैठाएगा !



गाड़ी से उतरकर जब उसने घर में पैर रखा तो उसे ऐसा लगा जैसे वह किसी पराए घर में आया है। घर जैसे खाने को दौड़ता था। उसने देखा कि बगीचे में एक जगह ज़मीन खोदकर एक बड़ा-सा गड्ढा बनाया गया है। कई लोग उस गड्ढे को घेर-कर खड़े थे। उनमें से कुछ लोग रूमाल से अपनी आंखें पोंछ रहे थे। सामने ही पादरी खड़ा था और कुछ गुनगुना रहा था। सबने मिलकर डेविड की मां को कब्र में दफन कर दिया। डेविड ने देखा कि पेगटी कुछ दूर खड़ी रो रही थी। डेविड ने सबसे पहले उसीके रोने की आवाज़ सुनी।

इसके बाद मि० मर्डस्टन ने सबसे पहला काम यह किया कि पेगटी को अपने यहां से छुट्टी दे दी। पेगटी भी अब वहां रहना नहीं चाहती थी। सिर्फ डेविड के कारण ही वह वहां से नहीं जाना चाहती थी लेकिन अब वह कर ही क्या सकती थी ! यहां से उसकी नौकरी ही खत्म हो गई। अब वह कैसे रह सकती थी ! उसने डेविड को समझाया-बुझाया और फिर आखिरी बार उसके सिर पर हाथ फेरकर वह वहां से चली गई।

इसके बाद तो उस घर में डेविड का रहना भी मुश्किल हो गया। अब कोई एसा नहीं बचा था जो ढंग से उससे बात करता। मि० मर्डस्टन और उनकी बहन का व्यवहार तो और भी खराब हो गया था। एक दिन मि० मर्डस्टन ने डेविड को अपने पास बुलाया और कहा, "तुम्हें अब स्कूल नहीं भेजा जाएगा। तुम्हारी पढ़ाई-लिखाई का खर्च मुझसे उठाते नहीं बनेगा। इसलिए मैंने तय किया है कि तुम्हें कहीं काम में लगा दूं।"

डेविड बेचारा क्या कहता ! दूसरे ही दिन मि० मर्डस्टन ने उसे लन्दन के एक शराबखाने में काम करने के लिए भेज दिया। इस शराबखाने का नाम था, 'मर्डस्टन एण्ड ग्रिन्बी'। यह नदी के किनारे बना था। यहां सस्ती किस्म की शराब बनाई जाती थी। शराब तैयार होने पर उसे बोतलों में भरा जाता था और बोतलों पर लेबिल लगाकर और जहाज़ में भरकर दूर-दूर तक भेजा जाता था।

इस कारखाने में डेविड बोतलें धोने और लेबिल चिपकाने का काम करता था। तनख्वाह के रूप में हर हफ्ते उसे छः शिलिंग मिलते थे। इस कारखाने में उसके जैसे कई लड़के काम करते थे। इनमें से कोई धोबी का लड़का था, तो कोई भिश्ती का, तो कोई खलासी का लड़का था, तो कोई मछुए का।

डेविड को इन लोगों के बीच रहना अच्छा नहीं लगता था। वह एक अच्छ घर का लड़का था। उसने आशा बांधी थी कि पढ़-लिखकर वह कोई अच्छा काम करेगा और अच्छे लोगों के बीच

रहेगा । लेकिन दुर्भाग्य से उसे इसी गन्दी जगह में मज़दूरी करनी पड़ रही थी और आवारा लड़कों के बीच रहना पड़ रहा था । बोतलें धोते-धोते अक्सर उसे पुरानी बातें याद हो आती थीं और उसकी आंखों में आंसू आ जाते थे ।



8

पहले दिन जब डेविड कारखाने में काम करने आया तो एक आदमी वहां उससे मिलने आया। उससे मिलने के पहले वह दूर से काफी देर तक उसे देखता रहा। वह एक लम्बा-चौड़ा और तगड़ा आदमी था। उसकी गंजी खोपड़ी धूप में चमक रही थी। उसने पुराने ढंग के कपड़े पहन रखे थे। लेकिन वह किसी बड़े घर का आदमी मालूम होता था। उसने पास आकर पूछा, "क्यों, तुम्हारा ही नाम डेविड कापरफील्ड है ?"

डेविड ने जवाब में सिर हिलाकर 'हां' कहा। फिर उसने अपनी जेब से एक कागज़ निकाला और कहा, "मेरा नाम मि० निकोबर है। मैं विण्डसर में रहता हूं। मि० मर्डस्टन ने चिट्ठी लिखकर मुझे बताया है कि तुम हाल ही में यहां काम करने आए हो और तुम्हारे रहने का कोई ठिकाना नहीं है। मेरे घर के पिछले हिस्से में एक कोठरी खाली है। तुम चाहो तो वहां रह सकते हो। तुम्हें ज़्यादा किराया नहीं देना पड़ेगा और मि० मर्डस्टन ने मुझे कहा है कि मैं तुम्हारी देखरेख करूंगा।"

डेविड चुपचाप सुनता रहा। उस आदमी ने आगे कहा, "तुम यहां नये आए हो। यहां के रास्ते तुम्हें मालूम नहीं। हो सकता है, तुम कहीं भूल जाओ, इसलिए मैं तुम्हें अपने साथ ले चलूंगा। तुम्हें यहां से छुट्टी कब मिलेगी ?"

डविड ने कहा, "रात के आठ बजे।"

रात में जब डेविड को छुट्टी हुई तो मि० निकोबर बाहर खड़े उसकी राह देख रहे थे। वे अपने साथ उसे घर ले गए। घर

पहुंचने पर उनकी स्त्री ने डेविड को खाने के लिए कुछ चीज़ें दीं और बैठकर बात करना शुरू किया। बातचीत के दौरान उसने बताया कि इधर कुछ दिन हुए, हम लोगों की हालत बहुत खराब हो गई है, वरना हम किसीको अपने यहां किरायेदार नहीं रखते। फिर उसने डेविड को वह कोठरी दिखाई जिसमें उसे रहना था।

डेविड वहीं रहने लगा।

वहां रहते हुए धीरे-धीरे डेविड को मालूम हुआ कि मि० निकोबर ने कई लोगों से उधार ले रखा है। उनके लेनदार दिन-भर घर के आगे भीड़ लगाए रहते थे। कोई दिन ऐसा नहीं जाता था कि जब कोई आकर उनसे अपने पैसे नहीं मांगता था और गालियां सुनाकर नहीं जाता था। ऐसे मौके पर मि० निकोबर चुपचाप घर में लेटे रहते थे और कोई जवाब नहीं देते थे। लोग गालियां देकर चले जाते।

लेकिन निकोबर की स्त्री को आशा थी कि कुछ ही दिनों में उनके पास इतना रुपया हो जाएगा कि वे लोगों का उधार चुका देंग। रुपया कहां से आएगा और कैसे आएगा—इससे उन्हें मत-लब नहीं था।

निकोबर की स्त्री ने ही डेविड को बताया कि देनदारों का रुपया न दे सकने के कारण इसके पहले भी दो-तीन बार मि० निकोबर जेल जाते-जाते बचे थे। हर बार उनके श्वसुर ने रुपया देकर उन्हें बचाया था, लेकिन अब श्वसुर नहीं रहे। वे मर चुके हैं और दूसरे लोग उनकी मदद नहीं करना चाहते। अब उन्हें कौन बचाएगा इसका कोई ठिकाना नहीं था। लेनदार ने उनपर मुकदमा दायर कर दिया।

मि० निकोबर बड़े सीध-सादे आदमी थे। उनके दिल में खोट नहीं थी। इसीलिए सब लोग उनसे नर्मी से पेश आते थे। उनके एक वकील मित्र ने उनकी तरफ से मुकदमा लड़कर उन्हें दिवालिया घोषित करा दिया और इस तरह उनकी जान बचाई। क्योंकि जिस आदमी को अदालत दिवालिया घोषित कर

देती है वह एक तरह से अपने ऋण से मुक्त हो जाता है और लोग फिर उससे तगादा नहीं करते। इस तरह जान बचाकर मि० निकोबर उसी रात लन्दन छोड़कर नौकरी की खोज में प्लाइ-माउथ चले गए।

अब फिर से डेविड अकेला रह गया। शराब के कारखाने में काम करते-करते और गन्दे लोगों के बीच रहते-रहते उसका मन ऊब गया था। वह किसी तरह वहां से छूटना चाहता था, लेकिन कहां जाए ? बहुत सोचने पर उसे अपनी दादी का खयाल आया। अब तक कभी दादी उसे देखने नहीं आई थी। उसने तय किया कि दादी के पास जाकर सारी बात बतानी चाहिए और उससे मदद मांगनी चाहिए।

उसने अपनी मां से कई बार दादी के बारे में सुना था। उसे यह भी मालूम था कि वह कहां रहती है लेकिन वहां तक पहुंचने के लिए काफी खर्च करने की ज़रूरत थी और डेविड के पास एक फूटी कौड़ी नहीं थी।

डेविड ने खूब सोचा। अन्त में एक राह निकल आई। उसने पेगटी के नाम चिट्ठी लिखी। इस बीच पेगटी ने बार्किस नाम के कोचवान के साथ विवाह कर लिया था। चिट्ठी मिलने पर पेगटी ने डेविड को दस रुपये भेज दिए।

इन रुपयों के अलावा शनिवार को हफ्ते-भर की तनख्वाह लेकर डेविड जाने के लिए तैयार हो गया, लेकिन इसी बीच उस पर एक आफत आ पड़ी। जो रुपये उसके पास इकट्ठे हुए थे उनमें से सोने का सिक्का उसने अपने मुंह में रखा, क्योंकि उसे डर था कि कहीं जेब से सिक्का गिर न जाए। फिर वह अपना सन्दूक लेकर बाहर आया। उसने एक गाड़ीवान को बुलाया। लेकिन गाड़ी का कोचवान बदमाश निकला। वह डेविड का सन्दूक गाड़ी में रखकर वहां से भाग निकला। डेविड चिल्लाता-चिल्लाता उसके पीछे दौड़ने लगा। कुछ दूर जाकर कोचवान ने गाड़ी रोकी और नीचे उतरकर डेविड की कमीज़ पकड़कर बोला,



"तुम खुद चोर हो। यह सन्दूक लेकर कहां भाग रहे थे? चलो, अब थाने, पुलिस के पास चलो?"

डेविड अपने कारखाने के मालिक से बिना पूछे ही चल पड़ा था। वह डरता था कि कहीं मालिक छुट्टी देने से इनकार न कर दे। इसलिए उसने उससे कुछ कहा ही नहीं था। पुलिस की बात सुनकर वह मारे डर के रोने लगा। इतने में उसके मुंह से सोने का सिक्का गिर पड़ा। कोचवान ने फौरन झपटकर सिक्का उठा

लिया । डेविड रोते-रोते बोला, "मेरा सिक्का दे दो ! मुझे और कुछ नहीं चाहिए ।"

कोचवान कहने लगा, "पुलिस के पास चलो, अगर वे लोग कहेंगे तो तुम्हारी मोहर तुम्हें सौंप दूंगा ।" यह कहकर वह गाड़ी लेकर वहां से भाग निकला । डेविड रोते-रोते दूर तक उसके पीछे भागा लेकिन थोड़ी ही देर में गाड़ी आगे निकल गई ।

• इस तरह डेविड का सब कुछ जाता रहा । उसके पास अब एक पैसा नहीं बचा । सन्दूक में उसने अपने कपड़े-लत्ते और कुछ रुपये रखे थे वे भी चले गए और सोने का सिक्का भी जाता रहा । लेकिन डेविड फिर वापस नहीं लौटा । वह पैदल ही आगे बढ़ने लगा । रास्ते में धूल और कीचड़ से उसके कपड़ मैले हो गए । भूख और थकावट के मारे उसके पैर लड़खड़ाने लगे । लेकिन फिर भी वह वापस लौटनें के लिए तैयार नहीं था । इस बार दादी से मिले बिना, वह रह नहीं सकता था । रास्ते में उसने भूख से बहुत परेशान होकर अपने पहने हुए कपड़ों में से दो-एक कपड़े बेच डाले और उनसे जो कुछ खाने को मिला उससे किसी तरह मन को समझाकर वह आगे बढ़ा । दिन-भर वह चलता था और रात कहीं भी थककर पड़ रहता था । इस तरह पांच दिन और पांच रात चलने के बाद और कई तरह की ठोकरें खाने के बाद वह डोबर नाम के गांव में पहुंचा । गांव में जाकर किसी तरह उसने अपनी दादी का घर ढूंढ़ निकाला ।

9



जब वह दादी के घर के पास पहुंचा, तब तक शाम हो गई थी। उसकी दादी मकान के बाहर बगीचे में बैठी थी। इतने में डेविड फटे-पुराने कपड़े पहने बिलकुल भिखारी के वेश में उसके सामने जा खड़ा हुआ। उसकी दादी उसे देखकर चौंक पड़ी। वह उसे पहचानती तो थी ही नहीं। उसने सोचा—कोई भिखारी है। उसने गुस्से में चीखकर कहा, "बाहर निकल यहां से। गंदा कहीं का! भाग यहां से! ऐसे लड़कों को तो मैं फूटी आंख देखना तक नहीं चाहती!"

कहां तो डेविड ने सोच रखा था कि उसकी दादी उसे देखकर बहुत खुश होगी और प्यार से उसे अपने घर में रख लेगी। लेकिन उसके मुंह से यह सब सुनकर वह कांप उठा। उसके पैर लड़खड़ाने लगे और चेहरा बिलकुल उतर गया, फिर वह डरते-डरते बोला, "दादी, मेहरबानी करके···"

दादी को यह सुनकर बड़ा ताज्जुब हुआ। उसे उसकी बात पर विश्वास नहीं हो रहा था। वह उसे फिर से डांटकर भगाना चाहती थी कि इसी बीच डेविड ने रोते-रोते कहा, "मेरा नाम डेविड कापरफील्ड है। मेरी मां ने मुझे बताया था कि जिस दिन मेरा जन्म हुआ था, उसी दिन तुम वहां से चली आई थीं, इसलिए तुम मुझे पहचानती नहीं।" फिर उसने दादी को सारा किस्सा कह सुनाया। उसने बताया कि किस तरह उसकी मां चल बसी, मि० मर्डस्टन और उसकी बहिन किस तरह उसपर जुल्म करते थे, फिर किस तरह उसे शराब के कारखाने में नौकरी करनी पड़ी

और यहां आते समय किस तरह उस बदमाश कोचवान ने उसकी कमाई का सारा रुपया छीन लिया।

यह सब सुनकर उसकी दादी को उसपर दया आ गई। वह उस अन्दर ले गई और अच्छी-अच्छी चीज़ें खाने को दीं। फिर उसने अपनी नौकरानी से कहा, "ज़रा ऊपर से मि० डिक को बुला लाओ।"

नौकरानी ने ऊपर जाकर मि० डिक को खबर दी। वे फौरन नीचे उतर आए। डेविड ने देखा कि मि० डिक बिलकुल गोल-मटोल आदमी थे। उनके सिर के बाल सफेद हो गए थे। उनके चेहरे पर हमेशा हंसी छाई रहती थी, लेकिन जैसे ही डेविड की दादी ने उन्हें कुछ डांटा तो उनके चेहरे से हंसी गायब हो गई और वे गम्भीर बन गए।

दादी ने डेविड के बारे में बताकर उनसे कहा, "अच्छा, अब यह बताओ कि डेविड का क्या किया जाए। ज़रा सोचकर बताना। इस तरह मूर्खों की तरह आंखें फाड़कर क्या देख रहे हो ?"

मि० डिक ने डेविड को ऊपर से नीचे देखकर कहा, "इसका क्या किया जाए ? मेरे खयाल से पहले इसे गरम पानी से नह-लाना चाहिए।"

दादी प्रसन्न होकर बोली, "बिलकुल ठीक। हां, सबसे पहले इसको नहलाना चाहिए।" फिर उसने नौकरानी से कहा, "फौरन पानी गरम करो।"

पानी गरम होने पर डेविड को अच्छी तरह मल-मलकर नहलाया गया। उन लोगों के यहां बच्चों के लायक कपड़े नहीं थे। इसलिए डेविड को मि० डिक के कपड़े पहना दिए गए और फिर दो-तीन कीमती शाल ओढ़ाकर उसे एक सोफे पर बिठा दिया गया। इसके बाद दादी ने फिर पूछा, "अच्छा डिक, अब क्या किया जाए !"

मि० डिक ने सिर खुजलाते हुए कहा, "अब ? लेकिन अभी तो इसको कुछ देर सोने दो। यह ज़रा आराम कर ले, फिर सोचा

जाएगा ।"

इस तरह उन दोनों ने तय करके डेविड को आराम से बिस्तर पर सुला दिया। डेविड को फौरन नींद आ गई। सोने के पहले यह सोचकर उसकी आंखों में आंसू आ गए कि अब उसके संकट के दिन समाप्त हो गए। दादी उससे प्यार करती है। उसने ईश्वर से प्रार्थना की कि अब वह हमेशा उसे दादी के पास ही रहने दे।

लेकिन दूसरे दिन सवेरे ही दादी ने बताया, "तुम्हारी बात मैंने मि० मर्डस्टन को लिख दी है।"

यह सुनकर मारे डर के डेविड का चेहरा सफेद पड़ गया। वह बोला, "क्यों, क्या मुझे फिर से वहीं भेज दोगी ?"

दादी ने कहा, "क्या करना है, अभी यह तो तय नहीं हुआ। जब मौका आएगा, तब तय कर लिया जाएगा।"

डेविड चुपचाप बैठा रहा। लेकिन उसकी छाती ज़ोर-ज़ोर से धड़कती रही। इतने में उसकी दादी ने कहा, "जाओ, ज़रा ऊपर जाकर देख आओ कि मि० डिक क्या कर रहे हैं। उनसे पूछना कि उनका जीवन-कथा लिखने का काम किस तरह चल रहा है।"

डेविड फौरन ऊपर जा पहुंचा। उसने देखा कि मि० डिक एक भारी-भरकम कलम लिए लिखने में इतने मशगूल थे कि उन्हें किसी वात की खबर ही नहीं थी। डेविड चुपचाप एक तरफ खड़ा रहा। वह आश्चर्य से कभी मि० डिक को देखता था और कभी उनके कमरे को। उसने देखा कि एक कोने में एक बड़ी भारी पतंग रखी हुई थी और उसके पास ही लिखे हुए कागज़ों के मोटे-मोटे बंडल पड़े थे। एक तरफ कई कलमें और स्याही की पुड़ियां रखी थीं।

लिखते-लिखते मि० डिक ने कलम टेबल पर रखी। एक बड़ी-सी डिबिया में से चुटकी-भर सुंघनी लेकर उसे अपनी नाक में चढ़ाने के बाद वे कुछ हंस पड़े। डेविड न उनसे दादी की बात

कही। मि० डिक ने कहा, "अपनी दादी से कहना कि लिखने का काम तेज़ी से चल रहा है।" फिर कुछ देर तक वे चुप रहे। बाद में वे तरह-तरह की बातें कहने लगे। उनकी गप्पें पूरी तरह से डेविड की समझ में भी नहीं आईं। अन्त में उन्होंने पतंग की ओर इशारा करके कहा, "देखो, वह जो कोने में पतंग पड़ी है, वह मैंने खुद बनाई है। कैसी बनी है ? आओ, चलो ज़रा उठाकर देखा जाए।" यह कहकर वे पतंग उठा लाए।

डेविड ने देखा कि उस पतंग पर छोटे-छोटे अक्षरों में बहुत-से शब्द लिखे थे। डेविड को इस तरह आश्चर्य करते देखकर मि० डिक हंस पड़े और बोले, "इसकी डोर बहुत लम्बी है। यह पतंग जितनी दूर पहुंचेगी उतनी ही दूर मेरे लेख भी पहुंच जाएंगे।"

इस तरह थोड़ी ही देर में दोनों एक-दूसरे से हिल-मिल गए। जब दादी ने पुकारा तो डेविड दौड़ता हुआ नीचे जा पहुंचा। दादी ने उससे पूछा, "क्यों, मि० डिक कैसे आदमी लगे ?"

डविड खुश होकर बोला, "वे तो बड़े मज़ेदार आदमी हैं !"

दादी ने उसे डिक का सारा किस्सा बताया और कहा, "हां, यह भला आदमी है। इसके रिश्तेदारों ने इसे पागल समझकर एक कमरे में बन्द कर रखा था। मैं इसे वहां से छुड़ाकर अपने यहां ले आई। यह मेरा दूर का सम्बन्धी है।"

इस तरह अपनी दादी के यहां आराम से डेविड के दिन बीतने लगे। इसी बीच उसकी दादी की चिट्ठी पाकर मि० मर्डस्टन अपनी बहिन के साथ वहां आ पहुंचे। उनके आने पर दादी ने उन लोगों को पहचाना नहीं, इसलिए खुद डेविड ने दादी से उन लोगों का परिचय कराया। अन्दर जाकर सब लोग एक जगह बैठ गए। डेविड वहां से उठकर जाने लगा, लेकिन दादी ने उसे जाने नहीं दिया। उसने नौकरानी के ज़रिए मि० डिक को भी वहीं बुला लिया।

जब सब लोग बैठ गए तो मि० मर्डस्टन और उसकी बहिन ने डेविड की निन्दा शुरू की। फिर मि० मर्डस्टन बोले, "मैं



आपको चिट्ठी लिखने के बजाय खुद ही आया हूं। अगर आपको कोई एतराज़ न हो तो इस लड़के को हमारे साथ वापस भेज दीजिए। यह बहुत ही शरारती और बदमाश हो गया है। आपको बहुत तंग करेगा। अगर इस समय यह हमारे साथ नहीं जाएगा तो फिर आगे से हमारे घर के दरवाज़े इसके लिए हमेशा के लिए बन्द हो जाएंगे। फिर हम इसे कभी अपने यहां नहीं आने देंगे।"

यह सब सुनकर दादी ने डेविड से पूछा, "क्यों, तुम इन लोगों के साथ जाना चाहते हो?"

इसके जवाब में डेविड ज़ोरों से रो पड़ा। रोते-रोते वह कहने लगा, "ये लोग मुझे मार डालेंगे। ये मुझे बहुत तंग करते हैं।

जब मेरी मां ज़िन्दा थी तब भी मुझे रोज़ मारते-पीटते थे और दिन-भर धमकाते रहते थे।"

यह सुनकर दादी ने मि० डिक से पूछा, "क्यों मि• डिक, अब इस लड़के का क्या किया जाए ? आपकी क्या राय है ?"

थोड़ी देर सोचकर मि० डिक ने कहा, "मेरी तो राय यह है कि फौरन एक दर्ज़ी बुलाया जाए और इसके कपड़े तैयार किए जाएं, क्योंकि अपने घर में बच्चों के लायक कपड़े नहीं हैं।"

दादी ने कहा, "हां,तुम्हारा कहना बिलकुल ठीक है।" फिर उसने मि० मर्डस्टन से कहा, "अब आप लोग जाइए। आप लोगों ने इसके बारे में जो कुछ कहा वह सब बिलकुल झूठ है, यह मैं अच्छी तरह जानती हूं। इस फूल जैसे बच्चे को आप लोग किस तरह मारते-पीटते थे, यह भी मुझे मालूम है। अब अगर आप भला चाहते हैं तो फौरन यहां से चलते बनिए।"

मि० मर्डस्टन और उसकी बहिन यह सुनकर फौरन उठ खड़े हुए। मारे गुस्से के उनके चेहरे लाल हो गए थे। वे डेविड की ओर घूरकर देखते हुए वहां से चले गए। उनके जाने के बाद डेविड ने राहत की सांस ली। वह दौड़कर अपनी दादी के घुटनों से चिपक गया। उसकी दादी का चेहरा भी खुशी से खिल उठा। फिर उसने मि० डिक के पास जाकर उनसे भी हाथ मिलाया।



10

दादी के यहां डेविड के दिन अच्छी तरह कटने लगे। यहां मि० डिक से उसकी अच्छी दोस्ती हो गई थी। रोज़ दोनों साथ-साथ पतंग उड़ाते और दिन-भर हंसते-खेलते रहते थे। मि० डिक की उम्र उसकी उम्र से चौगुनी थी फिर भी दोनों में खूब पटती थी। दादी भी उसे बहुत प्यार करती थी।

एक दिन मज़ाक में दादी ने कहा, "मि० डिक, यह लड़का आपको बहुत चाहता है, आज से आप इसके संरक्षक हुए। इसके नाम के पीछे 'ट्रोटउड' जोड़ दिया जाए, जो आपके नाम पर भी लगता है।"

और उस दिन से डेविड का पूरा नाम डेविड ट्रोटउड कापरफील्ड हो गया। दादी तो उसे प्यार से ट्रोट कहकर ही पुकारती थी। दादी के प्यार से डेविड को नया जीवन मिला। यहां अब वह बहुत खुश था। एक दिन दादी ने उसे पढ़ने भेजने की बात कही। पढ़ाई-लिखाई में डेविड का मन लगता था, इस-लिए वह फौरन राज़ी हो गया। दूसरे ही दिन दादी उसे स्कूल में भर्ती करने के लिए केण्टरबरी ले गई। रास्ते में डेविड ने पूछा, "क्यों दादी, वह स्कूल बहुत बड़ा है?"

"मुझे तो कुछ पता नहीं। हम लोग जिसके पास जा रहे हैं, वे सब कुछ ठीक कर देंगे। वे वहां के मशहूर वकील हैं। उनका नाम है मि० विक्फील्ड। वे सारा इन्तज़ाम कर देंगे।"

ठीक समय पर वे लोग मि० विक्फील्ड के घर जा पहुंचे। उन्होंने उनका स्वागत-सत्कार किया और फिर डेविड की दादी

से पूछा, "यह बच्चा कौन है ?"

दादी ने उन्हें सारा किस्सा बताया तो वे बोले, "इसे मैं किसी अच्छे स्कूल में फौरन भर्ती करा सकता हूं, लेकिन इसके रहने के लिए जगह इतनी जल्दी नहीं मिलेगी। खैर, कोई बात नहीं, तब तक यह मेरे यहां रह सकता है।"

जब दादी ने कुछ आनाकानी करनी शुरू की, तब वकील साहब बोले, "नहीं, नहीं, संकोच करने की कोई बात नहीं है। यह जितने दिन मेरे यहां रहेगा, उतने दिन का किराया मुझे दे देना।"

फिर वकील साहब उन दोनों को अपना मकान दिखाने लगे। ज़ीना चढ़कर जब वे लोग ऊपर गए तो जैसे ही उन्होंने दरवाज़ा खोला उन्हें एक छोटी-सी सुन्दर लड़की अपनी तरफ आती दिखाई दी। उसकी ओर इशारा करके वकील साहब ने कहा, "यह मेरी लड़की एग्नेस है। यही मेरे घर की देख-रेख करती है। यही डेविड की भी देख-रेख करेगी।" इसके बाद डेविड के रहने के लिए एक अच्छा-सा कमरा तय किया गया और दादी डेविड को कायदे से रहने की सीख देकर वापस घर लौट आई।

दूसरे दिन वकील साहब डेविड को एक स्कूल में भर्ती करा आए। वह स्कूल क्या था, एक छोटा-सा मदरसा था। इसे डाक्टर स्टोंग नाम के एक अच्छे सज्जन चलाते थे। इसमें कोई बीस-पच्चीस लड़के पढ़ते थे। डेविड को यह स्कूल पसंद आया। वह मन लगाकर पढ़ने लगा।

घर पर वकील साहब की लड़की एग्नेस के साथ उसकी अच्छी दोस्ती हो गई थी। दोनों साथ-साथ खेलते थे और खूब बात करते थे। डेविड उसके बिना एक क्षण भी नहीं रह पाता था। एग्नेस भी उसे बहुत चाहती थी।

11



वकील साहब के यहां डेविड के दिन आराम से कटने लगे। इस तरह धीरे-धीरे पांछ-छः साल बीत गए। उसकी पढ़ाई पूरी हुई। अंत में एक दिन उसे वकील और एग्नेस से विदा लेनी पड़ी। अब वह काफी बड़ा हो गया था। अब वह लम्बा कोट पहनता था, जिसकी जेब में एक घड़ी रहती थी, जिसमें सोने की ज़ंजीर पड़ी रहती थी।

अब डेविड कापरफील्ड एक पढ़ा-लिखा और समझदार युवक था। जिस एग्नेस को आज से पांच साल पहले उसने बिलकुल बच्ची की तरह पाया था वह भी अब एक सुन्दर युवती बन गई थी। डेविड को वहां से जाने की इच्छा नहीं हो रही थी। लेकिन अन्त में किसी तरह उसे उन लोगों से अलग होना पड़ा।

डेविड अपनी दादी के पास लौट आया। अभी यह तय नहीं हो पाया था कि डेविड को आगे क्या काम करना चाहिए। वह आराम से वहां रहता था और खाली समय में घूमने निकल जाता था, या किताबें पढ़ता रहता था। एक दिन उसकी दादी ने उसके हाथ में रुपयों की एक थैली रखते हुए कहा, "बेटा, सिर्फ घर में बैठे रहने से काम नहीं चलेगा। ये रुपये लो और जाओ, कुछ शहरों में घूम आओ। इससे तुम्हें यह तय करने में भी आसानी होगी कि अब तुम्हें क्या काम करना चाहिए।"

डेविड भी बहुत दिनों से घूमने जाना चाहता था। वह दूसरे ही दिन यात्रा पर निकल पड़ा। सबसे पहले वह वकील विक्फील्ड

के यहां गया। वहां एक दिन ठहरा। उसने वकील साहब तथा एग्नेस से खूब बातें कीं। दूसरे दिन वह लन्दन की ओर चल पड़ा।

डेविड को अपनी पुरानी नौकरानी पेगटी से मिलने की बड़ी इच्छा थी। पेगटी भी उसे भूली नहीं थी और कभी-कभी चिट्ठी लिखकर अपनी खबर देती रहती थी। वह पेगटी से मिलने के लिए रवाना हो गया। रास्ते में एक होटल में ठहरा। वहां स्टीअरफोर्थ नाम के अपने एक पुराने सहपाठी से उसकी मुलाकात हो गई। वह भी उसी तरफ जा रहा था। दोनों साथ-साथ आगे बढ़े।

डेविड जब पेगटी के घर पहुंचा तो पहले तो वह उसे पहचान नहीं सकी क्योंकि वह पहले से काफी बदल गया था और बहुत बड़ा हो गया था। आखिर जब उसने डविड को पहचाना तो उसकी आंखों से आंसू बहने लगे। डेविड भी अपने आंसू न रोक सका। फिर पेगटी उसे ऊपर बार्किस के पास ले गई। बार्किस उसे देखकर बहुत खुश हुआ। दोनों पुराने दिनों की बात याद करने लगे। बात-बात में बार्किस ने उसे बताया कि आजकल वह बीमार रहता है और पेगटी उसकी खूब सेवा-चाकरी करती है। पेगटी ने भी उससे खूब बातें कीं और फिर उसके लिए रसोई बनानी शुरू की। थोड़ी देर में उसका मित्र भी वहां आ पहुंचा। सबने साथ बैठकर भोजन किया। पेगटी बराबर उन दिनों की याद करती रही जब डेविड की मां ज़िन्दा थी और वह उन लोगों के यहां काम किया करती थी। पेगटी और बार्किस दोनों चाहते थे कि डेविड एक रात उन्हींके यहां रुक जाए, लेकिन साथ में उसका मित्र भी था और वह जाने की जल्दी मचाए हुए था, इसलिए न चाहते हुए भी उन लोगों ने डेविड को विदा किया।

इसी बीच रास्ते में डेविड को एक जगह अपनी दादी की चिट्ठी मिली। दादी उससे मिलने के लिए आगे के एक शहर में

एक सराय में ठहरी हुई थी। वहीं का पता चिट्ठी में दिया हुआ था। डेविड ठीक समय पर वहां पहुंचा। इतने दिनों बाद दादी से मिलकर वह बड़ा खुश हुआ। दादी ने उसे गले से लगा लिया। घर के और मि० डिक के हाल-चाल बताने के बाद दादी ने उससे पूछा, "डेबिड, तुमने अपने बारे में क्या सोचा ? क्या तुम्हें वकील बनना पसन्द है ? मेरे ख्याल से तो वकालत ही तुम्हारे लिए ठीक रहेगी।"

डेविड बोला, "हां दादी, वकालत मुझे भी पसंद है, लेकिन वकालत पढ़ने में पैसा खर्च होगा।"

दादी ने कहा, "हां, खर्च तो होगा ही, लेकिन एक हजार पौंड से ज्यादा क्या होगा ! इतना मैं तुम्हें दे दूंगी।"

दादी की बात सुनकर डेविड की आंखों में कृतज्ञता के आंसू भर आए। वह बोला, "दादी, इतने रुपये खर्च करके तुमने मुझे पढ़ाया है। अब और तुम पर मैं खर्च का भार कैसे लाद सकता हूं ! अब तो मुझे कहीं नौकरी कर लेनी चाहिए।"

दादी कुछ देर तक उसकी ओर देखती रही और फिर बोली, "नहीं बेटा, मैं चाहती हूं कि तुम किसी तरह पढ़-लिखकर आदमी बन जाओ और अपने पैरों पर खड़ हो जाओ। तुमने बचपन में बहुत दुःख झेला है। मुझे याद है वह दिन, जब तुम भिखारी की तरह फटे कपड़े पहनकर मेरे यहां आए थे। मि० मर्डस्टन ने तुम्हारा सब कुछ छीन लिया। अब मेरे सिवा तुम्हारा है ही कौन ! अगर मैं भी तुम्हारी फिक्र नही करूंगी तो और कौन करेगा ! और फिर मेरे रुपये किस काम आएंगे ? तुम रुपये की चिन्ता न करो। कल ही हम लोग किसी अच्छ वकील के यहां चलेंगे और उससे बात करेंगे।"



12

दूसरे दिन सवेरे दादी डेविड को साथ लेकर एक वकील के दफ्तर में पहुंची। वह उस नगर का बड़ा वकील था और नये लड़कों को अपने यहां रखकर वकालत की शिक्षा दिया करता था। अब तक वह कई लड़कों को वकील बना चुका था। उसके आफिस का नाम था 'मेसर्स स्पेनलो एण्ड जोकिन्स।'

डेविड के लिए वकालत की पढ़ाई का इन्तज़ाम करके दादी ने उसके लिए रहने की जगह ढूंढ़नी शुरू की। थोड़ी ही कोशिश से उन्हें नदी के किनारे का एक अच्छा-सा मकान किराये पर मिल गया। डेविड अपना सामान वहीं ले गया। इस तरह डेविड का सारा इन्तज़ाम करके दादी दूसरे दिन शाम को घर जाने के लिए तैयारी करने लगी। जाते-जाते उसने डेविड को सीख दी कि वह काम सीखने में खूब मन लगाए और जल्दी से जल्दी वकालत पढ़ने की कोशिश करे।

डेविड के इस नये मकान की मालकिन का नाम था श्रीमती क्रोक। वह बड़ी अच्छी स्त्री थी। वह रोज़ डेविड का कमरा झाड़-पोंछ देती थी और उसके खाने-पीने का इन्तज़ाम कर देती थी। डेविड को अक्सर एग्नेस की याद हो आती थी, क्योंकि जब वह मिस्टर विक्फील्ड के यहां रहता था, तब एग्नेस ही उसका सारा काम कर दिया करती थी। शुरू-शुरू में तो उसका मन यहां बिलकुल नहीं लगा। लेकिन बाद में धीरे-धीरे यहां भी उसकी जान-पहचान बढ़ने लगी।

एक दिन सवेरे नौकर ने आकर उसके हाथ में एक चिट्ठी



दी । डेविड ने देखा, वह एग्नेस की चिट्ठी थी । वह उसी शहर में थी और उस दिन दोपहर में उसने उसे मिलने के लिए बुलाया था । डेविड ने उसी नौकर के हाथ जवाब भेज दिया कि वह बारह बजे तक उसके यहां पहुंच जाएगा ।

ठीक समय पर डेविड एग्नेस के यहां जा पहुंचा । बहुत दिनों बाद वह एग्नेस से मिल रहा था । पहले तो डेविड उसे देखता ही रह गया । उसने देखा कि एग्नेस पहले से बहुत सुन्दर और शान्त हो गई है । डेविड ने बचपन में कहीं एक देवकन्या की मूर्ति

देखी थी। इस समय एग्नेस उसे उसी देवकन्या की मूर्ति के समान लगी। उसे देखकर डेविड की प्रसन्नता की सीमा न रही। उसके साथ बातें करते-करते उसे अपने बचपन के दिन याद हो आए।

काफी देर बाद एग्नेस ने उससे पूछा, "क्या यहां तुम्हारी मुलाकात मि० हिप से हुई थी?"

डेविड मि० हिप नाम के उस आदमी को जानता था। वह भी उसी शहर में रहता था, जिसमें एग्नेस रहती थी और उसके पिता के साथ वकालत सीखने के लिए काम किया करता था। वह बड़ा चालाक और धूर्त आदमी था। उसने पूछा, "क्या हिप लन्दन आया है?"

एग्नेस बोली, "हां, जब मैं यहां आई थी तो उसके एक हफ्ता पहले ही वह यहां आया था। मुझे लगता है कि वह मन ही मन किसी उधेड़बुन में लगा है। वह रोज़ नीचे आफिस में आता है, लेकिन आजकल मुझसे मिलता नहीं है। जानते हो, उसने पिताजी को फंसा लिया है और अब वह उनका हिस्सेदार बनना चाहता है!" और यह कहते-कहते एग्नेस की आंखों में आंसू आ गए।

डेविड अपना गुस्सा नहीं रोक सका और बोला, "बड़ा दुष्ट आदमी है वह! उससे तुम लोग दूर ही रहो तो अच्छा है।"

एग्नेस रोते-रोते बोली, "अब कोई रास्ता नज़र नहीं आता। मुझे लगता है कि उसकी चाल सफल हो जाएगी।"

इतने में जिस मकान में एग्नेस ठहरी थी, उसकी मालकिन वहां आ पहुंची। वह डेविड को भी जानती थी। उसने डेविड को अगले दिन अपने यहां भोजन के लिए निमन्त्रण दिया। इसके बाद एग्नेस से ज्यादा बात नहीं हो सकी और डेविड वापस लौट आया।

दूसरे दिन जब वह वहां पहुंचा तो उसने देखा कि मकान-मालकिन ने कई मेहमानों को भोजन के लिए आमंत्रित किया है।

उनमें हिप भी था। हिप का पूरा नाम यूरिया हिप था। न चाहते हुए भी डेविड को उससे मिलना पड़ा और बातचीत शुरू करनी पड़ी क्योंकि पहले से वह उसे जानता था। यही नहीं, भोजन समाप्त होने पर डेविड ने हिप को अपने घर कॉफी पीने के लिए निमंत्रित किया।

हिप ने जान-बूझकर चेहरा बनाते हुए उससे कहा, "मैं तो एक बिलकुल साधारण आदमी हूं। आप मेरे लिए इतनी तकलीफ क्यों करते हैं ?"

डेविड ने कहा, "इसमें तकलीफ की कौन-सी बात है ? बहुत दिनों बाद आपसे मुलाकात हो रही है। चलिए, थोड़ी देर आपसे बातें होंगी।"

इस तरह डेविड मि० हिप को अपने घर ले आया। डेविड ने कॉफी बनाई। कॉफी पीते-पीते मि० हिप ने कहा, "डेविड, सच-मुच तुम कोई महापुरुष हो, क्योंकि तुम्हारी हर बात सच निकलती है। याद है तुमने एक दिन कहा था कि मि० विक्फील्ड का मैं हिस्सेदार बनूंगा ?"

इसके उत्तर में डेविड ने सिर्फ सिर हिलाकर 'हां' कही।

हिप उत्साहित होकर कहने लगा, "उस दिन तुमने मेरे मन में एक इच्छा पैदा कर दी थी। उस दिन को मैं फिर कभी भूल नहीं सका। तुमने यह भी कहा था कि एग्नेस जैसी लड़की दुनिया में मिलनी मुश्किल है। यह बात भी मैं नहीं भूला। देखो मैं तुम्हें एक बिलकुल निजी बात बता रहा हूं, जिसे मैंने आज तक किसी-को नहीं बताया है। मैंने एग्नेस से विवाह करने का निश्चय किया है।" यह कहकर वह थोड़ा मुस्करा दिया।

यह दुष्ट व्यक्ति एग्नेस से विवाह करना चाहता है—यह सुनकर डेविड को बहुत गुस्सा आया। लेकिन वह कुछ सोचकर चुप रह गया। बातें करते-करते करीब आधी रात बीत गई, इस-लिए हिप को रात में वहीं रह जाना पड़ा।

इसके बाद कई दिनों तक हिप से डेविड की मुलाकात नहीं

हो सकी। एग्नेस से भी वह बहुत ही कम मिल पाया। जिस दिन एग्नेस वहां से घर लौट रही थी, उस दिन डेविड उससे मिलने गया। उसने देखा कि गाड़ी में एग्नेस के साथ हिप भी बैठा है। एग्नेस आंखों में आंसू भरकर डेविड की ओर देखती रही और गाड़ी चलने पर रूमाल हिलाती रही। हिप बराबर खिलखिलाकर हंसता रहा।

इसके बाद डेविड के दिन बहुत ही अकेले बीतने लगे। वह मन लगाकर कानून का अध्ययन करने लगा। रोज़ सवेरे वह खा-पीकर दफ्तर में पहुंच जाता था। शाम को वह इधर-उधर घूमने निकल जाता था। किसी दिन नाटक देखने चला जाता था और किसी दिन दादी को अथवा एग्नेस को चिट्ठी लिखने बैठ जाता था। इसी तरह एक के बाद एक महीने बीतने लगे।

13



एक दिन अचानक डेविड का मित्र स्टीअरफोर्थ वहां आ पहुंचा। बहुत दिनों बाद दोनों मित्र मिले थे इसलिए बड़े प्रसन्न थे। लेकिन स्टीअरफोर्थ ने जेब से एक कागज़ निकालकर डेविड के हाथ में रखते हुए कहा, "लो, मैं यारमाउथ से आ रहा हूं। इस बीच मैं पेगटी के घर मिलने गया था। वहीं मालूम हुआ कि पेगटी के पति बार्किस की तबियत बहुत खराब है। वह तुम्हें एक बार देखना चाहता है।"

यह सुनकर डेविड थोड़ी देर के लिए सन्न रह गया। बार्किस से उसकी कोई बहुत अच्छी जान-पहचान नहीं थी। सिर्फ उसकी गाड़ी में बैठकर वह बचपन में तीन-चार बार आया-गया था। लेकिन पेगटी को भला वह कैसे भूल सकता था! चिट्ठी बार्किस ने ही लिखी थी। उसे पढ़ने के बाद डेविड वहां रुक नहीं सका। थोड़ी ही देर बाद यात्रा का इन्तज़ाम करके वह रवाना हो गया।

वहां पहुंचकर डेविड ने देखा, बार्किस की तबियत सचमुच बहुत खराब थी। वह बिस्तर पर पड़ा था और उसका चेहरा बिलकुल काला पड़ गया था। बार्किस उस समय बेहोश था। डेविड के पहुंचने पर पेगटी ने बार्किस के कान में कहा, "देखो, कौन आया है? जिसे तुम देखना चाहते थे वही—डेविड आया है। ज़रा एक बार आंखें तो खोलो।"

लेकिन बार्किस ने कोई जवाब नहीं दिया। पेगटी की आंखों से आंसू झरने लगे। एक बार फिर उसने अपने पति को पुकारा।

इस बार बार्किस ने धीरे से आंखें खोलीं। उसने एक बार पेगटी की ओर देखा और फिर डेविड की ओर देखकर वह धीरे से मुस्करा दिया और फिर दूसरे ही क्षण वह बेहोश हो गया। इसके बाद फिर उसने आंखें नहीं खोलीं। कुछ ही देर बाद वह इस संसार से विदा हो गया।

मरने से पहले बार्किस ने एक वसीयतनामा तैयार कराया था। पेगटी ने उसे डेविड के हाथ में दिया था। डेविड पढ़कर दंग रह गया। बार्किस ने ज़िंदगी-भर एक-एक पैसा जोड़कर तीन हज़ार पौंड इकट्ठे कर लिए थे। उसमें से थोड़ा हिस्सा डेविड को भी मिलने वाला था। डेविड एक दिन और पेगटी के यहां रहा और उसे ढाढ़स बंधाता रहा। फिर वह वहां से वापस लौट आया और अपने काम में लग गया।

जिस कम्पनी में डेविड काम करता था उसके बड़े वकील का नाम मि० स्पेनली था। उसकी पुत्री डोरा जब फ्रांस से पढ़कर लौटी तो उन्होंने अपनी जान-पहचान के लोगों को एक दावत दी। उसमें डेविड को भी आमंत्रित किया गया। भोजन के बाद मि० स्पेनली ने डोरा से डेविड का परिचय करवाया। डेविड उससे बातें करने लगा। लेकिन वह डोरा की मधुर आवाज़ को सुनकर इतना मुग्ध हो गया कि खुद कुछ बोल ही नहीं सका। डोरा देखने में भी बहुत सुन्दर थी। थोड़ी ही देर में डेविड उससे खूब घुल-मिल गया।

इसके बाद तो अक्सर वह मि० स्पेनली के घर आने-जाने लगा। घंटों वह डोरा के पास बैठकर तरह-तरह की बातें करता रहता था। डोरा उसे फ्रांस के किस्से सुनाती थी और कभी वाय-लिन बजाकर उसका मनोरंजन करती थी। डोरा से मिलकर डेविड एग्नेस को भी भूल गया। अब वह डोरा के बिना एक क्षण भी नहीं रह पाता था। अन्त में उसने एक दिन तय किया कि वह मि० स्पेनली से कह दे कि वह उनकी पुत्री डोरा से विवाह करना चाहता है।

लेकिन इसी बीच एक संकट खड़ा हो गया। एक दिन अचानक उसकी दादी उसके पास आ पहुंची। उसने बताया कि उसके रुपये जहां रखे हुए थे, उस दफ्तर में कुछ गड़बड़ होने से सारे रुपये डूब गए। अब सिर्फ मकान के अलावा और कुछ नहीं बचा था। उस मकान को किराये पर उठाकर दादी यहां चली आई थी।

यह सब सुनकर डेविड को अपने कानों पर विश्वास नहीं रहा। कुछ देर तक तो उसकी समझ में ही नहीं आया कि यह सब क्या हो रहा है। दादी के साथ मि० डिक भी आए थे। उसका चेहरा बिलकुल उतरा हुआ था। डेविड जानता था कि दादी के रुपयों की देखभाल वकील मि० विक्फील्ड किया करते थे। उसने पूछा कि सारा रुपया किस तरह चला गया। लेकिन दादी बेचारी क्या बताती!

सबसे ज़्यादा नुकसान तो डेविड का ही हुआ था। क्योंकि मि० स्पेनली को, जिनके यहां वह काम सीखता था, अभी रुपया नहीं दिया गया था। बिना रुपया दिए आगे काम नहीं चल सकता था। इसलिए वह मि० स्पेनली से मिलने गया। उन्होंने कहा, "देखो भाई, इसमें मैं तुम्हारी कोई मदद न कर सकूंगा, क्योंकि मेरे हिस्सेदार मि० जोकिन्स एक भी रुपया छोड़न के लिए तैयार नहीं हैं।"

डेविड कम्पनी के दूसरे हिस्सेदार मि० जोकिन्स से मिलने गया। जोकिन्स ने भी बड़े ध्यान से उसकी बात सुनी और उसकी मुसीबत से हमदर्दी ज़ाहिर की। लेकिन उन्होंने जो जवाब दिया उसका मतलब यही था कि वे डेविड की मदद तो बहुत करना चाहते हैं, लेकिन कम्पनी के दूसरे हिस्सेदार मि० स्पेनली ऐसा करने के लिए तैयार नहीं हैं। इस तरह दोनों ने एक-दूसरे का नाम लेकर बहाना बना दिया।

ऐसी स्थिति में डेविड को वकालत पढ़ने की अपनी इच्छा छोड़ देनी पड़ी। पहले तो वह बहुत निराश हो गया, लेकिन फिर जल्दी ही उसने अपन लिए आगे का रास्ता तय कर लिया। उसने

इधर अखबार के एक दफ्तर में संवाददाता का काम कर लिया। फिर धीरे-धीरे उसने साहित्य की ओर ध्यान देना शुरू किया। वह किताबें लिखने लगा।

पहले तो डेविड को संदेह था कि उसकी पुस्तक कोई नहीं पढ़ेगा। इसलिए बहुत डरते-डरते उसने अपनी किताब छपवाई। लेकिन थोड़े ही समय में उसकी प्रसिद्धि फैलने लगी और धीरे-धीरे उसकी आमदनी भी बढ़ने लगी।

इधर कुछ दिनों बाद मि० स्पेनली की अचानक मृत्यु हो गई। बाद में पता चला कि उन्होंने रुपया खर्च कर डाला था और अपनी लड़की के लिए कुछ नहीं छोड़ा था। अब डोरा भी गरीब हो गई थी। उससे शादी करने के रास्ते में जो बाधा थी वह अचानक टल गई थी। डोरा अब एक धनवान पिता की पुत्री न रही। डेविड ने ज़रा-सी कोशिश की और डोरा राजी हो गई।

विवाह का दिन अभी दूर था। डेविड ने सबसे पहले दादी, पेगटी ओर एग्नेस को पत्र लिखे। फिर सभी इष्टमित्रों को इसकी सूचना दे दी। सब बहुत खुश हुए। उसकी दादी तो इतनी प्रसन्न हुई कि कुछ न पुछो।

डेविड ने सबको सूचना दी, लेकिन अपने पुराने मित्र स्टीअरफोर्थ को सूचना नहीं दी। क्योंकि स्टीअरफोर्थ इस बीच पेगटी का एक बहुत बड़ा नुकसान करके कहीं भाग गया था। डेविड ने ही उसका परिचय पेगटी के परिवार से कराया था इसलिए यह सब सुनकर डेविड को बहुत दुःख हुआ। अब वह स्टीअरफोर्थ का नाम तक नहीं सुनना चाहता था।

14



दादी ने इस बीच एक चिट्ठी लिखकर डेविड से कहा, "ज़रा किसी दिन जाकर डोवर वाले अपने घर की देखभाल कर आओ।" यह वही घर था, जिसमें दादी रहती थी और जिसमें अब किरायेदार बसा दिए गए थे।

डेबिड फिर एक बार घूमने-फिरने का मौका पाकर फौरन रवाना हो गया। डोवर में वह एक दिन रहा। वहां सब कुछ ठीक-ठाक था। लौटते समय वह यारमाउथ भी गया। बहुत दिनों से वह इस इलाके में नहीं आया था। यहां आकर बचपन की स्मृतियां उभर आईं। वह एग्नेस से मिलना चाहता था। मि० विक्फील्ड से भी मिले बहुत दिन हो गए थे।

वह मि० विक्फील्ड के दफ्तर में पहुंचा। वहां सबसे पहले उसकी मुलाकात मि० निकोबरसे हुई। ये वही सज्जन थे, जिनके मकान में डेविड उन दिनों किरायेदार की तरह रहता था जब वह शराबखाने में काम करता था। इनपर लोगों का उधार इतना बढ़ गया कि इन्हें घर छोड़कर भागना पड़ा। यहां आकर इन्होंने मि० विक्फील्ड के आफिस में काम कर लिया था। लेकिन विक्फील्ड से इनका कोई मतलब नहीं था। हिप इनको फंसाकर ले आया था और ये हिप का ही कहना मानते थे, क्योंकि अब तक हिप ने मि० विक्फील्ड का लगभग पूरा कारोबार अपने हाथ में कर लिया था।

अन्दर बगीचे में एक छोटा-सा मकान था, जिसमें तरह-तरह की किताबें और कीमती कागज़ रखे हुए थे। यह हिप का दफ्तर

था। हिप ने डेविड का स्वागत किया और उसे मि० विक्फील्ड के पास ले आया। मि० विक्फील्ड डेविड से मिलकर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने उसको अपने ही यहां रहने के लिए निमंत्रित किया और कहा,"जब तक तुम यहां हो तब तक हमारे ही यहां रहो। जिस कमरे में तुम पहले रहते थे उसीमें तुम्हारे रहने का इन्तज़ाम कर दिया जाएगा।"

कुछ देर उनसे बात करने के बाद वह एग्नेस से मिलने गया। लेकिन वहां जाकर उसने देखा कि एग्नेस के सामने हिप की मां इस तरह बैठी थी जैसे पहरा दे रही हो, और सचमुच वह रात-दिन उसपर नज़र रखती थी। एग्नेस खुलकर डेविड से बात नहीं कर सकी। उसे हमेशा हिप और उसकी मां का डर बना रहता था।

पहले दिन डेविड कुछ नहीं बोला। लेकिन दूसरे दिन उसका मन ऊब गया। और वह घूमने निकल पड़ा। लेकिन वहां भी वह अकेला नहीं रह सका। अचानक हिप से उसकी मुलाकात हो गई। वह उसके पीछे-पीछे ही आ रहा था। उसने शरारत में मुस्कराकर कहा, "क्यों डेविड, आज अकेले ही कैसे निकल पड़े?"

डेविड ने कहा, "और क्या करूं, जी ऊब गया था, इसलिए घूमने निकल पड़ा हूं।" लेकिन हिप बड़ा चतुर था। उसने इधर-उधर की बातें शुरू कर दीं। अन्त में किसी तरह डेविड से यह मालूम कर लिया कि वह डोरा से विवाह करने जा रहा है। यह सुनकर उसकी सारी चिन्ता मिट गई।

उसी दिन रात को भोजन के समय एक घटना घट गई। मि० विक्फील्ड किसी छोटी-सी बात को लेकर हिप पर बहुत नाराज़ हो गए। हिप ने जब उनको खुश करने के उद्देश्य से एग्नेस की तारीफ करनी शुरू की तो वे और नाराज़ हो गए और डांटकर बोले, "खबरदार, तुम मेरी लड़की का नाम न लेना!"

हिप ने बनावटी ढंग से हंसते हुए बात को टालने की कोशिश

की और फिर कहा, "आपको तो मालूम ही है कि एग्नेस के साथ मेरा विवाह होने वाला है, इसलिए अब आपको इस तरह नाराज़ नहीं होना चाहिए।"

यह सुनकर मि० विक्फील्ड मारे गुस्से के आग बबूला हो उठे और चिल्लाकर बोले, "चुप रहो ! तुम्हारे साथ मेरी लड़की का विवाह नहीं हो सकता। तुमने जीते जी मेरा खून कर डाला, मेरा घर-बार लूट लिया, मेरी सुख-शान्ति छीन ली है। तुम मेरे दुश्मन हो !"

लेकिन हिप पर इसका कोई असर नहीं हुआ। वह बहुत बदमाश आदमी था। उसने हंसकर कहा, "नहीं वकील साहब, मैं तो आपका मित्र हूं ! मैंने आपका घर-बार लूटा नहीं, बल्कि उसको लुट जाने से बचाया है। आप भूल रहे हैं कि मैंने आपकी कितनी मदद की है।"

इस तरह काफी देर तक दोनों लड़ते-झगड़ते रहे। हिप ने डेविड से कहा कि किसी तरह वकील साहब को शान्त करो, वरना ये आज खूब शराब पीएंगे। मि० विक्फील्ड वैसे तो बहुत ही भले आदमी थे लेकिन अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद से वे बहुत शराब पीने लगे थे।

डेविड कुछ कहे उसके पहले ही मि० विक्फील्ड ने एक आह भरकर कहा, "ओह डेविड, मैं क्या से क्या हो गया हूं ! अपनी दशा पर मुझे खुद आश्चर्य होता है। मैं रोज़-रोज़ अपने सर्वनाश के रास्ते पर बढ़ता जा रहा हूं। मुझमें न अब हिम्मत रह गई है, न किसी काम को करने की इच्छा होती है। मैंने अपने हाथों अपना नुकसान किया है। अगर आज एग्नेस की मां जिन्दा होती, तो मेरी दशा कुछ और ही होती। अब तो मैं ज़िन्दा ही मर चुका हूं !" यह कहते-कहते उनके पैर लड़खड़ाने लगे और वे धम से एक कुर्सी पर बैठ गए।

कुछ देर तक चुप रहने के बाद हिप की ओर इशारा करके वे फिर कहने लगे, "इस आदमी को मैंने एक भला आदमी समझ

कर अपने यहां रखा, पढ़ाया-लिखाया और इसकी मदद की। मुझे इसपर विश्वास था, इसलिए सारा कारोबार मैंने इसके हाथ में सौंपा। लेकिन इसने मुझे धोखा दिया और अब धीरे-धीरे मेरे पूरे कारोबार पर कब्ज़ा कर लिया है।"

मि० विक्फील्ड कुछ और कहने जा रहे थे कि इतने में एग्नेस वहां आ पहुंची और कहने लगी, "पिताजी, आज आपकी तबियत ठीक नहीं, चलिए सो जाइए।" यह कहकर वह मि० विक्फील्ड को अन्दर ले गई।

डेविड भी वहां से उठकर अपने कमरे में लौट आया। लेकिन उसे नींद नहीं आई। काफी देर तक एक किताब पढ़ने की कोशिश करता रहा। इतने में एग्नेस उसके कमरे में आकर बोली, "डेविड, कल तुम यहां से जा रहे हो, पता नहीं कल तुमसे मिलने का मौका मिले या न मिले, इसलिए अभी मैं मिलने चली आई।"

डेविड ने देखा कि उसकी आंखों से आंसू बह रहे हैं। उसे बड़ा दुःख हुआ। लेकिन वह कर ही क्या सकता था! वह बोला, "एग्नेस, मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर पा रहा हूं, इसका मुझे बड़ा अफसोस है।"

यह सुनकर एग्नेस अपने आंसू नहीं रोक सकी। वह सिसकते-सिसकते बोली, "नहीं, तुम इसमें कुछ नहीं कर सकोगे। कोई कर ही क्या सकता है! ईश्वर जो चाहता है, वह तो होकर ही रहेगा।" दोनों थोड़ी देर तक चुप बैठे रहे और फिर एग्नेस उठकर वहां से चली गई।

दूसरे दिन सवेरे हिप डेविड के पास आया और कहने लगा, "डेविड, तुम्हें यह सुनकर प्रसन्नता होगी कि मि० विक्फील्ड के साथ मेरा झगड़ा खत्म हो गया है। अब हम दोनों में मित्रता हो गई।" डेविड यह सुनकर कुछ देर चुप रहा। उसका मन एक अनिश्चित आशंका से भर गया। उससे छिपा नहीं था कि हिप के कहने का क्या मतलब है। उसे हिप की बात पर बिलकुल विश्वास

नहीं हुआ। लेकिन फिर भी हंसकर वह बोला, "ठीक है, अगर ऐसा है तो बड़ी खुशी की बात है।"

उसी दिन सबसे विदा लेकर डेविड वहां से चल पड़ा। वहां से जाते समय उसे बड़ा दुःख हो रहा था, साथ ही यह सोचकर उसे शर्म भी आ रही थी कि वह एग्नेस और उसके पिता को हिप के चंगुल से बचाने में कोई मदद नहीं दे पा रहा था।



15

कुछ दिनों बाद निश्चित समय पर डेविड और डोरा का विवाह हुआ। दोनों साथ-साथ सुख से रहने लगे। इस बीच एक लेखक के रूप में डेविड को काफी सफलता मिलने लगी थी। कई पत्रिकाओं में उसकी रचनाएं छपने लगी थीं। धीरे-धीरे डेविड की प्रसिद्धि बढ़ने लगी। लिखने-पढ़ने के काम में डोरा उसकी मदद करती थी और हमेशा उसकी हिम्मत बंधाती रहती थी।

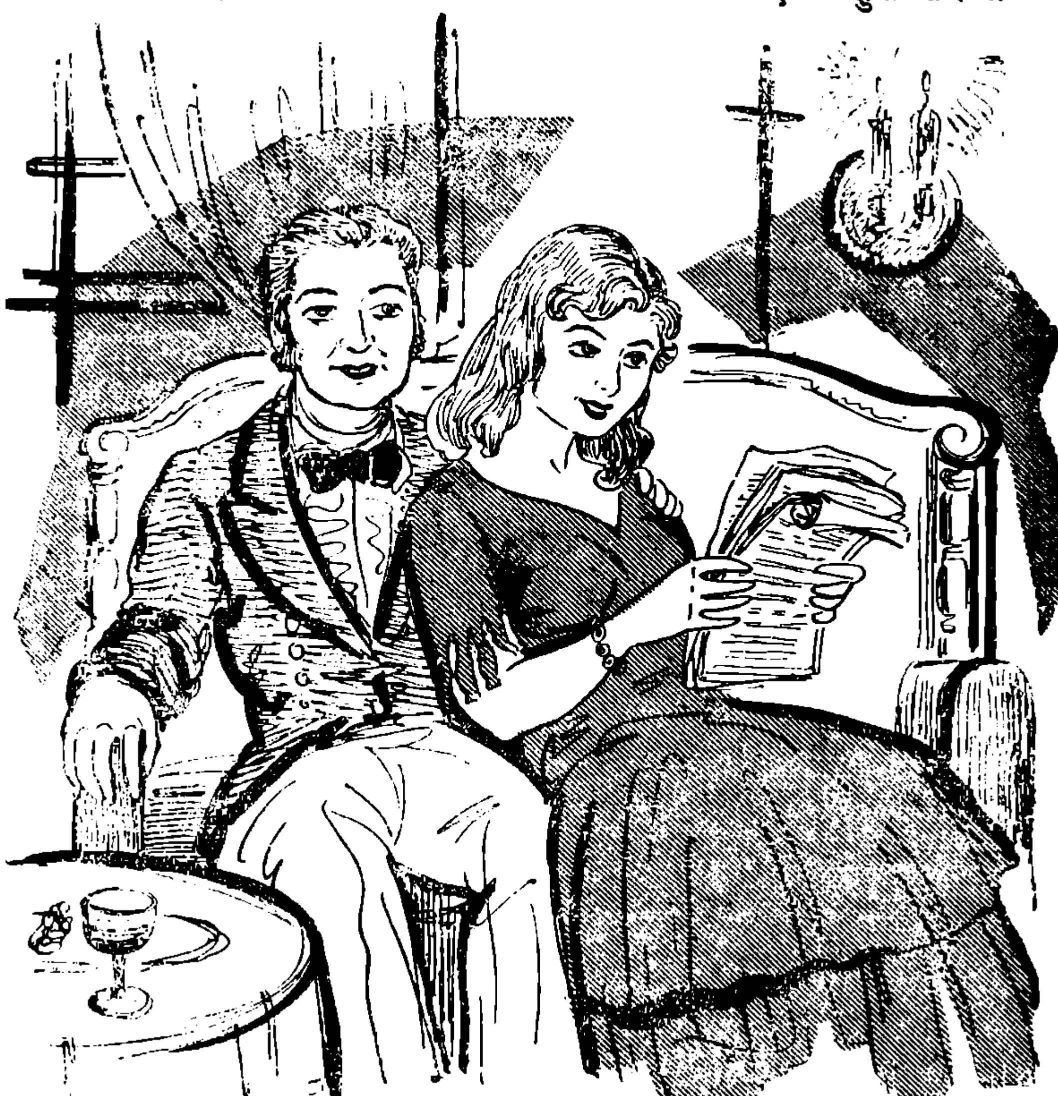
डेविड जब लिखता था तो थोड़ी ही देर में उसकी टेबल लिखे हुए और काटकर फेंके हुए कागज़ों से भर जाती थी। इसलिए डोरा हमेशा उसके आसपास रहती थी और उसके लिखे हुए कागज़ों को संभालकर रखती थी। जब वह लिख लेता था तो वह उसकी लिखी हुई रचनाओं को पढ़कर सुनाती थी और अगर उसमें कोई छोटी-मोटी गलती रह जाती थी तो उसे ठीक कर देती थी और हंसी-हंसी में उसके नीचे अपने दस्तखत कर देती थी। डेविड उसका यह लड़कपन देखकर हंसता रहता था। कभी-कभी डेविड को लिखते-लिखते काफी रात हो जाती थी, लेकिन डोरा उसके पास ही बैठी रहती थी।

इसी तरह खुशी-खुशी दिन कटने लगे। अब दादी भी डेविड के पास ही लन्दन में रहती थी। उसमें और डोरा में खूब पटती थी। डोरा हमेशा इस बात की कोशिश करती थी कि दादी को किसी बात की तकलीफ न हो।

मि० डिक भी दादी के साथ वहीं आ गए थे। कुछ दिनों बाद उन लोगों ने पेगटी को भी अपने यहां रहने के लिए बुला लिया।

जब से पेगटी का पति मरा था तब से वह बड़ी परेशान रहती थी। अपने पुराने मालिक के यहां फिर से नौकरी पाकर पेगटी बड़ी प्रसन्न हुई। आते ही उसने घर का सारा कामकाज संभाल लिया। बहुत दिनों बाद डेविड को पेगटी के हाथ का बनाया हुआ खाना खाने को मिला। इस तरह सब आराम से रहने लगे।

इसी बीच एक दिन डेविड को मि० निकोबर की चिट्ठी मिली। उसमें लिखा था कि मि० विक्फील्ड ने एक बहुत जरूरी



कामसे उसे मिलने के लिए बुलाया है। यही नहीं चिट्ठी में डेविड के घर के सभी लोगों को आमंत्रित किया गया था।

डेविड ने सोचा कि ज़रूर कोई खास बात होगी, वरना मि० निकोबर की चिट्ठी नहीं आती। इसलिए दूसरे ही दिन वह दादी और मि० डिक को लेकर मि० विक्फील्ड के यहां जा पहुंचा। वहां मि० निकोबर से उन लोगों की मुलाकात हुई। निकोबर ने उन लोगों का स्वागत किया और फिर एक गोल लपेटे हुए कागज़ को दिखाकर कहा, "अब थोड़ी ही देर में आप लोगों को दिलचस्प घटना देखने को मिलेगी। मेरे साथ अन्दर आइए!"

यह कहकर निकोबर सब लोगों को हिप के दफ्तर में ले गया। अन्दर पहुंचकर उसने हिप को आवाज़ दी और कहा, "ये मि० डेविड कापरफील्ड और डेविड की दादी और मि० डिक आपसे मिलने आए हैं!"

"आइए, आइए, मेरे बड़े सौभाग्य हैं!" यह कहते हुए हिप बाहर आया और हंसकर उसने सब लोगों का स्वागत किया। फिर उसने निकोबर से कहा, "अन्दर जाकर एग्नेस और मेरी मां को बुला लाओ। उनसे कहना कि मेहमान लोग आए हैं!"

मि० विक्फील्ड तो बीमारी के कारण बिस्तर में पड़े थे। इसलिए वे आ ही नहीं सकते थे। लेकिन एग्नेस थोड़ी देर में वहां आ पहुंची। जब सब लोग बैठ गए तो हिप ने मि० निकोबर को वहां से चले जाने का हुक्म दिया। निकोबर आनाकानी करने लगा। यह देखकर हिप ने ज़रा सख्ती से कहा, "क्यों, सुना नहीं, मैंने कहा न कि आप अब बाहर जाकर काम कीजिए!"

लेकिन निकोबर ने बाहर जाने के बजाय ज़ोर से बोलते हुए कहा, "मैंने सब कुछ सुना है, लेकिन अगर मेरी मर्ज़ी नहीं है तो मैं नहीं जाऊंगा। आज मैं तुम्हारी शरारत की सारी पोल इन लोगों के सामने खोल देना चाहता हूं!"

निकोबर को सभी लोग सीधा-सादा आदमी मानते थे। और यह भी जानते थे कि इतने दिनों तक बेकार रहने के कारण वह

बहुत दब्बू प्रकृति का हो गया है, लेकिन आज अचानक उसे इस तरह बात करते देखकर न सिर्फ हिप बल्कि सभी लोग चौंक पड़े।

हिप कहने लगा, "तो तुमने मेरे खिलाफ षड्यन्त्र रचने के लिए ही इन लोगों को यहां इकट्ठा किया है ? अब समझा मैं तुम्हारी चाल !" फिर कुछ रुककर ज़रा धीमी आवाज़ में वह बोला, "मैं जानता हूं कि तुम मुझसे जलते हो। लेकिन मैं तुमसे कहे देता हूं कि इस तरह झगड़ा करने से कुछ नहीं होगा। हम दोनों के बीच जो मामला है उसे हम लोग बाद में अकेले में तय कर लेंगे।"

लेकिन निकोबर ने गुस्से में कांपते हुए कहा, "चुप रहो। मैं तुम्हारी सारी पोल अभी खोल देता हूं।" यह कहकर उसने अपनी जेब से कागज़ निकाला और कहा, "यह है तुम्हारी शरारत का सबूत !"

हिप ने एग्नेस से कहा, "मिस एग्नेस, यह आदमी मेरा अपमान करना चाहता है, ऐसी हालत में तुम ज़रा यहां से चली जाओ तो ज़्यादा अच्छा हो।"

लेकिन एग्नेस वहां से नहीं हटी। मि० निकोबर ने वह कागज़ सबको दिखाते हुए कहा, "आप सब लोग ज़रा इस कागज़ को ध्यान से देखिए। यह कागज़ इस आदमी की शरारत का सबूत है। इससे आप लोगों को मालूम होगा कि किस तरह धोखेबाज़ी करके हिप ने मि० विक्फील्ड के बनावटी दस्तखत बनाए हैं और इस तरह उनकी सारी जायदाद अपने नाम कर ली है। मैंने यहां काम करने के बाद जब इसकी धोखाधड़ी का पता लगाया तो मुझे यह देखकर बड़ा ताज्जुब हुआ कि कैसे मि० विक्फील्ड ने इन सारी बातों पर विश्वास कर लिया। मैंने सारे कागज़ात अपने कब्ज़े में कर लिए हैं।"

यह सुनकर हिप का चेहरा उतर गया। वह लपककर अन्दर गया और उस सन्दूक को खोलने लगा जिसमें सारे ज़रूरी

कागज़ात रखे हुए थे। लेकिन निकोबर ने उसमें से सारे कागज़ निकाल लिए थे। संदूक को खाली पाकर हिप चीख उठा, "इसमें से मेरे कागज़ भी तुमने चुरा लिए !"

निकोबर बोला, "और क्या इन कागज़ात को तुम्हारे कब्ज़े में रहने देता ! तुमने वकील साहब को धोखा देकर सारे ज़रूरी कागज़ चुरा लिए थे। लेकिन याद रखो कि अब तुम्हारी कलई खुल गई है और तुम बच नहीं सकोगे।" फिर उसने डेविड की दादी की ओर घूमकर कहा, "और आपकी भी सारी जायदाद, जिसके कागज़ आपने वकील साहब के यहां जमा करके रखे थे, इसी तरह धोखे से इस आदमी ने हड़प लिए हैं। लेकिन वे सब कागज़ अब मेरे कब्ज़े में हैं और आपके रुपये आपको मिल जाएंगे।"

डेविड की दादी ने गुस्से में आकर हिप का गला पकड़ लिया। सब लोगों ने बीच-बचाव करके उन्हें अलग कर दिया। दादी ने कांपते हुए कहा, "मैं तो यही समझे बैठी थी कि वकील साहब मेरे रुपये खो बैठे हैं, लेकिन आज मालूम हुआ कि यह सब इस दुष्ट की करतूत थी !"

डेविड ने गम्भीर आवाज़ में कहा, "मि० हिप, आपने जितने जाली कागज़ात तैयार किए हैं उन सबको फौरन हम लोगों के हवाले कर दीजिए। मैं आपको एक भला आदमी समझता था। मुझे मालूम नहीं था कि आप हम सबको इतना बड़ा धोखा देंगे। लाइए, सारे कागज़ कहां हैं।"

हिप ने असली कागज़ों को छिपा रखा था और उनकी जगह नकली कागज़ तैयार कर लिए थे। इनमें से कुछ कागज़ पहले से निकोबर ने निकाल लिए थे। लेकिन फिर भी वह अकड़कर बोला, "अगर मैं न दूं तो ?"

"अगर आप ऐसा करेंगे तो आपको जेल जाना पड़ेगा। मैं अभी निकोबर को पुलिस में खबर देने के लिए भेजता हूं। यह न भूलिए कि मैंने भी यहां रहकर वकील साहब से कानून की शिक्षा

पाई है।"

अन्त में मजबूर होकर हिप को सारे कागज़ात निकाल देने पड़े। इसके बाद वह वहां से चलता बना। बाद में उसका क्या हुआ किसीको पता नहीं।

मि० निकोबर ने डेविड का इतना बड़ा काम किया था, इसलिए दादी ने काफी इनाम दिया। बाद में निकोबर उन रुपयों को लेकर व्यापार करने के लिए आस्ट्रेलिया चला गया।

यह पूरी घटना मि० विक्फील्ड की अनुपस्थिति में ही घटी थी। वे बेचारे अपने बिस्तर में पड़े थे। जब उन्हें यह सब मालूम हुआ तो उनकी खुशी की सीमा न रही। एग्नेस भी बहुत प्रसन्न थी। उसे तो सपने में भी आशा नहीं थी कि कभी उसे हिप के चंगुल से छुटकारा मिलेगा।



16

इसके बाद बहुत दिनों तक कोई विशेष घटना नहीं घटी। सब आराम से मिल-जुलकर रहते थे और अपना-अपना काम करते थे। इतने में अचानक डेविड की पत्नी डोरा बीमार पड़ गई। कई दिनों तक वह बिस्तर पर पड़ी रही। बीच में थोड़ा अच्छी हुई, लेकिन इसके बाद फिर पड़ी तो कभी नहीं उठी। लम्बी बीमारी के साथ एक दिन वह चल बसी। इसका डेविड को बड़ा सदमा पहुंचा। वह उसके शोक में जैसे पागल हो गया। उसकी दादी को तो इस घटना से इतना धक्का लगा कि कुछ ही दिनों में वह भी चल बसी।

अब फिर से डेविड अकेला रह गया। उसका किसी काम में मन नहीं लगता था। बाहर उसे किसीसे मिलने की इच्छा नहीं होती थी और घर में आता था तो घर जैसे काटने को दौड़ता था। उसने डोरा को भुलाने की बड़ी कोशिश की लेकिन वह उसे भूल नहीं सका।

वह बाहर यात्रा करने निकल पड़ा। जर्मनी, फ्रांस, इटली, स्विट्ज़रलैंड वगैरह में वह भटकता फिरा। जब भी उसे डोरा की याद हो आती थी तो उसका दिल बैठने लगता था और आंखों में आंसू आ जाते थे। दो-तीन साल तक वह इधर-उधर भटकता फिरा। लेकिन उसे शांति नहीं मिली। इस बीच उसने सिर्फ एक ही काम किया। उसने एक लम्बा उपन्यास लिखा। जब वह छप कर बाज़ार में आया तो चारों तरफ उसकी प्रसिद्धि फैलने लगी। देखते-देखते वह एक बड़ा लेखक हो गया।

इस तरह घूम-घामकर जब वह फिर लौटा तो एक दिन एग्नेस से मिलने गया। अब सिर्फ एग्नेस ही रह गई थी जो सुख-दुःख में उसका साथ देती थी। इस बीच उसने डेविड को सांत्वना देने की बड़ी कोशिश की। उसकी कोशिश से डेविड का मन बहलने लगा।

धीरे-धीरे ऐसा हुआ कि डेविड एग्नेस को बहुत चाहने लगा। अब वह उसके बिना नहीं रह पाता था। अन्त में एक दिन उसने उसके आगे शादी का प्रस्ताव रखा। एग्नेस भला इससे अधिक और क्या चाह सकती थी! वह फौरन राज़ी हो गई। इसके अलावा एक बात और थी। मरते समय डोरा ने एग्नेस से कहा था, "मेरे बाद तुम डेविड की देखभाल करना और उससे शादी कर लेना, तभी मेरी आत्मा को शांति मिलेगी।" एग्नेस बचपन से ही डेविड को बहुत चाहती थी।

और फिर एक दिन डेविड और एग्नेस का विवाह हुआ। दोनों की खुशी की सीमा न रही।

•••

मुद्रक ; मित्तल प्रिंटर्स शाहदरा, दिल्ली 282122